A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 250 Subject Religiou

Name of MSS महाभारत; विदुर प्रजागरपर्व

Author कृष्णलाल

Period 1878 वि० Folios –

Script Hindi Source Prithipal Singh

Missing Folios –

250

श्रीराधारमनोजयति ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ अथ विदुरप्रजागर लिष्यते ॥ दोहा ॥
सुमति सदन सिंदुर वदन एकदंत वरदानि ॥ घनरुचि विघन विघन विनांसकर
गनपति मोदकपानि ॥ १ ॥ सरद सुधानिधि वदन दुति सुमिरौं सारदमाय ॥ ताकें [illegible]
पाकटाछते विमल बुद्धि अवगाहि ॥ २ ॥ वंदौं गुरु गोविंद के चरनकमल सिर [illegible]
स ॥ कहौं जथामति वरनिकै भारथ मधि इतिहास ॥ ३ ॥ धृतराष्ट्र सौं विदुर नें
यो धर्मसंवाद ॥ कहत कुसभा भावरानि सुनत विलाय विषाद ॥ ४ ॥ नागनग
हि पै वसैं कुरुवंसी तहीं भूप ॥ तिनके जसकी जोति जग जगिमगि रही अनूप ॥ [illegible] ॥
हाराज सांतन भए तिहां वंस विष्यात ॥ सब दीपन व षंडमैं मंडित गुन अवदात ॥
छंद पद्धरी ॥ सुत तीनि भए तिनकैं अषंड ॥ इक भीषम उद्धत बल उदंड ॥ तिनि
कु दंड दंडे अषंड ॥ नव षंड विहंडे दुवन ठंड ॥ ७ ॥ तिनि नितत्व सा[illegible] जियमैं विचारि ॥
जराज छाडि हरिपद निहारि ॥ सब विषय वास ना[illegible] वारि ॥ [illegible]

नारि ॥ ८ ॥ दूजे चित्रांगद जु अरूढ ॥ गंधर्व साथ जह भयो जुद्ध ॥ जहां जुद्ध करत नृप
भए उकाल ॥ लघु भ्रौ विचित्रवीर जन्नपाल ॥ ९ ॥ दोहा ॥ नृप विचित्रवीरज भए ति
हकुल तेज निधान ॥ उदय अस्त लग अवनि पर मानत तिनकी आंन ॥ १० ॥ तो
टिक छंद ॥ पुनि ता नृपकैं सुत ती नि भए ॥ मुनि व्यास कृपा करि आप दए ॥ धृतराष्ट
सु पंडु वली भनियें ॥ विदुरो हरि भक्तन मैं गनियै ॥ १० ॥ सोरठा ॥ धृतराष्ट द्रगहीन विदु
र भए दासी गरभ ॥ राजा पंडु प्रवीन राजनीति के मत कस्यो ॥ ११ ॥ तोमर छंद ॥ तिहि दे
स भूपति पंडु ॥ अति ही भयौ वलवंडु ॥ सव षंडि सत्रु चंड ॥ महि जीतियो नव षंड ॥
१२ ॥ छिति यौं करयो तहराज ॥ दिग्विज्यों भयो सुरराज ॥ इक द्योस के चित चाइ ॥ मृग
या गयो कुरुराय ॥ १३ ॥ मुनि अप्प पत्नी तिय संग ॥ मृग कैर हौ रतिरंग ॥ सर मारियो
इक तांनि ॥ तिहि प्रान की भई हांनि ॥ १४ ॥ तबनु कहि कैं प्रति दीन ॥ यह श्राप भूप
ह दीन ॥ रति जो करै तिय साथ ॥ विन प्रान होइ नृपनाथ ॥ १५ ॥ मृग श्राप भूप विचा

भा॰ वि
२
भ

चारि ॥ अपनो कियो उरधारि ॥ मनमैं भयो मुउदास ॥ वनमैं कियो तहवास ॥ १५ ॥ दोह
पंडु उभय पतिनी सहित विपन गए तजि साज ॥ धृतराष्ट्र लाग्यो करन महिमंडल को
राज ॥ १६ ॥ धृतराष्ट्र नृप कै तनय एक सो एक ॥ दुरजोधन तिनमैं वडो अभिमानी
अविवेक ॥ १७ ॥ चौपई ॥ छत्र चमर धृतराष्ट्र धरै ॥ राजकाज दुरयोधन करै ॥ मा
नत आन चारि हू चक्क ॥ प्रवल प्रतप तपै जिमि अक्क ॥ १८ ॥ दोहा ॥ द्वै पतिनी नृप पं
डु कै परम रूप अभिरांम ॥ अति सुसील पति देवता कुंती माद्री नाम ॥ १९ ॥ विपन
वास पति संग रहैं गात तन छू वै गात ॥ सावधान सेवा करैं सुमिरि आप की वात ॥ २० ॥
॥ कवित्त ॥ कुंती को आवत हो आ करषन मंत्र एक दीनौं हुतो मुनि दुरवासा नैं वताइ
कैं ॥ ताके मन आवति संत तिउ पजाइवे की कीनौं सुमिरन लीने देवता वुलाइ
कैं ॥ एक पुत्र धर्म ही तैं दूसरो प्रभंजन तैं तीसरो पुरंदर तैं लीनौ उपजाय कैं ॥ यु
धिष्टिर भीम अरजुन तीन्यो सुतन के नाम कीने सकल मुनीन लहा आइ कैं ॥

॥दोहा॥ बहुरि सपतिनी कौं निरखि कलौ बचन तिनएह॥ एक देवता सुमिरि कैं ए
कपुत्र लहु लेहु॥२२॥ उन सम मैंयो बडवालनय धारि हियैं इह भेव॥ तिन तैं ताकें है भए ना
मन कुल सहु देव॥२३॥ एक दिना लघु तिय निरखि नरपति भयो सकाम॥ एकांत स्थ
ल ज्ञानि कैं लीनी निकट बुलाम॥२४॥ उनडत्तर बहु विधि दयो उन नहि मानी एक॥
होंनहार के हि रहे भूले सकल विवेक॥२५॥ सुरति संग करि भूप नैं प्रान तजे तत्काल॥
पतिनी करति विलाप बहु समझावति मुनि बाल॥२६॥ रोलाछंद॥ माद्रसुता तब सौं
पि सपतिनी कौं सुत दोऊ॥ पावक कौ कियौ प्रवेस लगाई भरता सग सोऊ॥२७॥ निरखि र
हे मुनि चित्त नैन नकरु ना भरि आए॥ कुंती सह सुत पंच तनय हस्तिनापुर पहुंचाए॥२८॥
कुंडलिया॥ आए सुनि नृप पांडुसुत पुरजन अति सुष पाइ॥ विविधि बधाई साजि
कैं आगें आए धाइ॥ आगैं आए धाइ साजि कैं कलस सुहाए॥ बंदनवार बधाय तिय
नबहु मंगल गाए॥ गाए मंगल सूत विरद जै जै मत भाए॥ कहत नगर के लोग।

भा॰ वि॰
३

हमारेरच्छकआए ॥ दोहा ॥ साष्टांगवंदनकरयौमहाराजकौंआय ॥ धृतराष्ट्रसिर
सूंघिकैंलीनौंकंठलगाय ॥ २९ ॥ यथायोगिसबसौंमिले उद्धितपंडुसुतदेखि ॥ दुरजो
धनकेचित्तरहचिंताबढीविसेष ॥ ३१ ॥ बहुतभांतितबछद्रकौलागैयाकरनउपाइ ॥ कु
छाकरैंतिनकेदमनतिनकोकृष्णसहाइ ॥ ३२ ॥ दुरजोधनकृतईरषाश्रुतिहिअनी
तिनिहारि ॥ नगरछांडिसुतलेचलीकुंतीसमैंविचारि ॥ ३३ ॥ सबनीतिनकीनीतिरह
राजारंकजुकोइ ॥ समैंदेखिकैंचलतसैं अंतसखीवहुहोइ ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ नागपुरछांडि
पंडुसुतचले ॥ देसदेसनगरविलोकतभले ॥ लाछागृहपावकतबचे ॥ कृष्णप्रीतिसौं
तनमनरचे ॥ ३५ ॥ विपतिविरिनिनिरवाहतकाल ॥ ठहरेजायदेसपंचाल ॥ गंगाती
रबसेमनलाइ ॥ लीनीपरनकुटीरकछाइ ॥ ३६ ॥ भिक्षालामैंपुतलेजाइ ॥ धरेमाता
केआगेंआइ ॥ मातकहेदुनौंबडभाग ॥ बांटिलेहुपांचौसमभाग ॥ ३७ ॥ असामां
गिमातुकीअसैं ॥ पांचौभागकरैंतबतैसैं ॥ नित्यकृत्यकरिभोजनकरैं ॥ रहविधिसमैं ३

पंडुसुत भरैं ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ तहां स्वयंवर जग्य इक रच्यो द्रुपद नरनाह ॥ देस देस के भूप। सब आए सहित उछाह ॥ ३९ ॥ चौपई ॥ चंचल एक बनायो मच्छ ॥ ऊंचे निपट बांधियो लच्छ ॥ घृत पूरन कराह इक लाइ ॥ ताके तर हरध्यो बनाइ ॥ ४० ॥ कीनी नृप तिप्रतिज्ञा इही ॥ टेरि सभा में सब सों कही ॥ आ समइ छिति के नरनांथ ॥ सबही सुनौं कांन देगाथ ॥ ४१ ॥ घृत भाजन में देखै अच्छ ॥ एक बान सों भेदै मच्छ ॥ राजा रंक जु कोऊ होइ ॥ कन्या रत्न लहै नर सोइ ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ उद्दित है सब देस के भूप विहारे नरनांथ ॥ मच्छन का हू भेदियो गए लुमीं डत हाथ ॥ ४३ ॥ रोला छंद ॥ जहां तहां सों गाथ द्विजन के संग सुहाए ॥ कौंतिग देषन काज तहां कुंती सुत आए ॥ अर्जुन तीत्यो लछि कही। ज्यौ हीं त्यौं कीनी ॥ भई प्रतिज्ञा जानि सुता नृप सुत कौं दीनी ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ लै तन पा नृप द्रुपद की कही मात सों आनि ॥ लेआए निधि एक इह हम सुन गृह जानि ॥ ४५ ॥ आंगे जे सै कहति ... ही बोली तिहि प्रमान ॥ आपुस मैं करिलेउ तुम पांचौ भाग स

मान॥४६॥अर्ज्जुनवाच॥तोटकछंद॥तुममातकहायहवातकही॥नृपकीत
नेयायहजीतिलही॥तवमातकहीनृककहीतुमसही॥तुमतातकरोनिरवाहइही
४७॥दोहा॥सूतमगतिअतियमकीतरकनहींउरआनि॥ताकेपतिपांचौभएवचा
नेमातुकेमानि॥४८॥गीतिकाछंद॥तवदेसुतानिजपुत्रसोंनृपयोंकहीयहकीजि
ये॥द्विजकोंनहेंकहदेसकेसवसोधइनकोलीजियें॥निसएकतिनकेसदनटिग
अप्रगटह्वैकेंसारहौ॥नृपनंदपरमप्रवीनतिनकौभेदभाषासोंलहौ॥४९॥क
रजोरिकैंनृपसोंकहीमहाराजयोउरआनिये॥नहिविप्रएकोउवडेकुलकेसू
रछत्रीजानियें॥नरनांथनिकटवुलाइयोतवपूछियोवहुभाइकें॥कुलवंसकी
मनिजानिकेंहरख्यौहियेंसुखपाइकें॥५०॥दोहा॥वहुतदाइजोद्रुपदनेंविधिसोंकियो
विवाह॥प्रगटभएजवपंडुसुतदुरजोधनउरदाह॥५१॥गीतिकाछंद॥कुरुभूपसों
पचालपतिपतियालिषीकरिरीतिकी॥पठयोपुरोहितआपनोविनतीकरीव॥

हुप्रीतिकी॥ अवधारियोंसेदस२हहसवन्नपन केसिरताजजू॥ सुतए तिहारेभ्रातके इ
नकीसवैतुमलाजजू ॥५२॥ कुलमेंविरोध वृथांनकीजेनीतिचित्तविचारियैं॥
अवराजइनकौंदीजियैजुभईसुवातविसारियैं॥ सवमित्रमंत्रीवूझिकैंकछुउचितहे
इसुकीजियें॥ महाराजतुमसरवसुहोइह जगतमैंजसुलीजियै॥५३॥ दोहा॥ प्रोहित
राजाद्रुपदकौंपहुच्योकुरुपतिद्वार॥ राजसभामैंलेगयोतहींवीरप्रतिहार॥५४॥
सोरठा॥ आसिषदैवहुभायपत्रदियोमनुहारिकरि॥ कहेौसदेसवनाइकहेौबहुभूप
चालपति॥ ५५॥ सुनिकुरुभूपसंदेससुदुरजोधनसोंयोंकही॥ दीजैउनकौंदेस कुलक
लेसनहिंकीजियै॥५६॥ कहेौअनेकप्रकारगंगागेयअरुविदुरहूं॥ मंत्रकहेौनिर
धारअर्थराजदीजैउनह॥५७॥ प्रतिउत्तरसुविचारिलिख्योदुपदमहाराजकौ॥ सहि
तवहुतमनुहारिनृपतिनपतिकौंज्यौंलिषत॥५८॥ भुजंगीछंद॥ वडेभागिजा।
केसमाचारपाए॥ भएपांडुभूपालकेपुत्रआए॥ भयोंऔरआनंदउरमैंनवीनो।

मा॰वि॰ वडेवंसकौ ईससंवंधकींनौ ॥ ५९ ॥ कृपा ज्यों करी त्यों सदेव कीजियै जू ॥ भतीजे यहां लौं
५ पठे दीजियै जू ॥ कौरा राजवेश्रापनों श्राप श्राधौ ॥ विरोधै निवारो सवै सिद्धि साधौ ॥ ६
चौपई ॥ साजि चमूल वहृद पद नरेस ॥ पंडुन पति पठए गजदेस ॥ कहति पुजा स्रुति श्रुत
श्रुति श्रांन दभींनी ॥ धनि जगरीस घरी २६ कीनी ॥ ६१ ॥ राजपुत्र निज धांम हश्राए ॥
धांम धाम प्रति वजत वधाए ॥ करि श्रविषेक लहे मन भाए ॥ सज्जन वंधु सकल रिषि
श्राए ॥ ६२ ॥ चामर छंद ॥ श्रवि कात तैं नए विचार चारु पै वकहो ॥ श्रद्ध राजवाटिकें श्र
आलस त्रु कों दयो ॥ सासना पुजा समस्त मो १ राज्ञक्ष मान नहीं ॥ एक राजपुत्र चैन चित्त मैं
नश्रांन हीं ॥ ६३ ॥ होइ है वली महीप एक राज मैं जहां ॥ सर्वथां विनास देह धारि कें वसे तहां
पंडु पुत्र जानि के रही मनो हियै घरयौ ॥ ६४ ॥ १ श्याम दराज थान श्रापनौ करयौ ॥ मक्त
दाम छंद ॥ कियौ वसवास पुरंदर धश्य ॥ सवै सुव पाय भए जन स्वश्य ॥ ६ सो दिसमं
दिप्रताप प्रचंड ॥ मिलो किउ ६ उनमैं नव षंड ॥ ६५ ॥ वली लघु भ्रात पिता सम जानि ॥ सुश्री ५

पसलेत सबै सिर मानि ॥ सबै पुर लोग रहैं अविषाद ॥ न कोउ तजे अपनीं मरजाद ॥ ६६
सदां सुनि पेस बके सुभ कर्म ॥ सबै सब जांति विरुध न धर्म ॥ सबै गुन मंडित श्री जुत दी
न ॥ सबै श्रुति रूपउ दार प्रवीन ॥ ६७ ॥ भरैं कुरु भूप वडे दरवार ॥ चमू चतुरंग अभंग अपा
र ॥ जगी जग जोति सबै भरिपूर ॥ पगी उर प्रीति मुकंद सौं भूरि ॥ ६८ ॥ कहां लग संप
ति कीजै वषान ॥ प्रभाव अपार करैं वहु दान ॥ सदा सब वैरिन के उर साल ॥ विरा
जत धर्म तनै नरपाल ॥ ६९ ॥ दोहा ॥ उदित विक्रम सक्रसुत कीरति विजय कहा
इ ॥ हयौ अजीरन अगनि कौ वन षांडीव दहाय ॥ ७० ॥ मय दानव निकस्यौ ।
तहां लीनौं मरत जिवाय ॥ दीनी सभा वनाय तिनि त्रिप्रति उपकार विचारि ॥ ७१ ॥
छंद मोतीदाम ॥ रची अपनीं मय माया पाउ पाइ ॥ सभा की प्रभा न कछू कहि जाइ ॥ अ
नेक वने गृह अद्भुत भाय ॥ रही तिहु लोकन मैं छवि छाय ॥ ७२ ॥ सबै वृलाउ तहां दर
साय ॥ हियैं भ्रम कौंन कैं होइ न आइ ॥ विलोकत लोचन लेइ लभाय ॥ वढै छवि पुंज

भा॰वि॰ ६ मनोवचकाय॥७२॥उपेंद्रवज्राछंद॥प्रभाकहांलौंकहियेसभाकी॥लसैहैधर्मीस
मतानताकी॥अनेकमायामयनिर्मईहैं॥अमंदसोभाचहुधांछईहैं॥७३॥तहांवना
एवहुभांतिपछी॥कूजंतवानीकलकूकअछी॥फूलेफलेभूरुहसोभसाजैं॥रि
तूसवैदेहधारीविराजैं॥७४॥लसैंनीरभारेजहानपान्यौं॥भरेजातजहांजातुनजा।
न्यौं॥छलछुवारेतलषेनजांहीं॥जहांनआहीलखियेतहांही॥७५॥तोटकछंद॥वहुभां
तिलसैंकलकीपुतरी॥अवहींजनुएनभतैंउतरी॥वहुरंगनअंगसिंगारधरैं॥अप
नेअपनेसवकाजकरैं॥७६॥जहांभूपविराजतधर्मतनै॥तिनकीप्रभुतावरनीत
वनै॥हियमैंहरिदेवकोध्यानधर्यो॥अवचाहतहैंनपरूपकर्यो॥७७॥दोहा॥संगच
मूचतुरंगदैंसाजिविविधिविधिसाज॥विदाकरेचाल्योअनुजचहुदिसजीतनका
ज॥७८॥सोरठा॥प्राचीदिसिमगदेसजरासिंधुविक्रमडहित॥जीतिजीतिसवदेस
अवरोधेभूपतिवहुत॥७९॥चौपई॥महाराजजारेपतिराजैं॥द्वारावतीनगरवल।
साजैं॥भूपतिकीविनतीलषिआयौ॥आनिदूततयौंवैनसुनायौ॥८०॥जीति ६

जीति मागध नृप लीनौं॥ निगड बंध सब भूपति कीनौ॥ प्रबल अंध्यार को उद छिनभ्रा
वैं॥ कृष्णदेव बिन कौंन छुटावै॥२०॥ तिहि बिरतांत दूत नि आए॥ समाचार ए हरि हि सु
नाए॥ इंद्रप्रस्थ कुंतीसुत राजा॥ ताकी प्रभु तुम कौं सब लाजा॥२२॥ सब सहाय चा
लि आप करौ जो॥ राजसूय आरंभ करै तौ॥ सुनि हरि हियैं दया भरि आई॥ बोलि उ
द्धव बात सुनाई॥२३॥ कहो मंत्र जैसो चित धरियै॥ पहलें काज कौंन सौं करियै॥ उ
द्धव कही ईस जस लीजैं॥ एक काज मैं दोऊ कीजे॥२४॥ राजसूय मैं राज पधारो॥ छूटैं
नृपति मगधेस हि मारो॥ मित्र मंत्र सुत बंधु बुलाए॥ सब पयान के साज सजाए॥ दप
बहु तुरंग गज वाहनी घनी लै॥ सोलह सहस संग पतिनी लै॥ सहत उछाह अधिक उछ।
विछाए॥ पंडुपुत्र के धाम सहाए॥ निरखि ईस श्रीकृष्ण पधारे॥ भए बिबस नहिं अं
गस भारे॥ हियैं भूरि सुख पुंज विहारे॥ मनहु प्राण मृत देहन धारे॥२५॥ छप्पै॥ व पा
रीति सब मिले हि हूलसि हियैं लिराए॥ कुशल परस्पर बूझि अधिक तन मन सुख पा
ए॥ राजसूय की बात कही जो जिय की बिलाषी॥ संग लिजो रि नरेस सकल संप।

तिसो भाषी ॥ प्रभुतुम प्रतापदिस औ विदिस अर्जुन जीति आए सकल ॥ प्राची दिस ।
मगद देस इक जरासंधव च्यो प्रबल ॥ ८८ ॥ तोमर छंद ॥ हसियौं कही जदुनाथ ॥ मगदेस
की बल गाथ ॥ मघ तेक ही नहि जाति ॥ विख्यात है बहु भांति ॥ ८९ ॥ बहु धोर सो बल गा
हि ॥ नहि जदु जीत्यो जाइ ॥ छल सा जिहनियै ताहि ॥ नृप पुंज को दुष जाहि ॥ ९० ॥ क
रिवैं हमै इह काज ॥ जब जग्य की जहु राज ॥ इहमैं कियो निरधार ॥ नहि औइ आन प्रकार ॥ ९
१ ॥ दोहा ॥ कृस्न भीम अर्जुन चले विप्र भेष अवधारि ॥ पहुचे मगध मही पइह
मयो प्रात विचारि ॥ ९२ ॥ जरासंधवाचसोरठा ॥ जा चिल्ले हु द्विज दान जग मै कछु चित
चाहियैं ॥ बहुत कियो सनमान जो निश्च पूरब मै मिलुर ॥ ९३ ॥ दोहा ॥ जदुदान जाचौं
तुन्यो अरू निरषी दृग नहारि ॥ मगधनाथ पहचानि तब बोल्यो रिस उर धारि ॥ ९४ ॥
भुजंगप्रियात ॥ बडे वंस छत्री बडी लाज धारी ॥ भली भिछ्छ की तूं तिजी मै विचारी ॥ ब
ली जो इते तो भले क्यों न आए ॥ छिपे ज्यान ते जुद्ध के चाह पाए ॥ ९५ ॥ कहा हो न मै मौं
न ख्यौ पैसि घारौ ॥ दया चित्त धारौं जनेऊ निहारौ ॥ कहा हो वषानो हि यै ना हि लाज्यो

७

कितीविरलछोडिसंग्रामभाज्यो॥९६॥सपाकृस्नके जुद्धमंडौंनतोसों॥ घरीहैभिरे
तौभिरै भीममोसों॥ रूपेवीरदोउजगाह जुद्धसाज्यो॥ महीव्योममलौंपूरिकैंनादवाज्यो
९७॥ प्रचारैवचावैनहारैनकोऊ॥ तकेआपनीअपनींजीतदोऊ॥ दिनावीस अैसो सा
तलौं जुद्धगालो॥ तहांभीमश्रीकृस्नकीओरचालो॥९८॥ तिनूकातहींहाथगोवि
दलीनौं॥ दुहूंहाथसोंचीरिकैंडारिदीनौ॥ वहीभीमनैंदाउजीमैंविचार्यो॥ जरासंध
कौसंधहीतेविदार्यो॥९९॥दोहा॥ जरासंधकेप्रानहतिवधेछुटाएभूप॥ अपनेअप
नेगरहगएहरिगुनगनतअनूप॥१००॥ दीनौंताकेतनयकौंतिहीं देसकोराज॥ इंद्र
प्रस्थलैआइयेराजसूयकेकाज॥१०१॥ कह्योजगपआरंभउरपूरिपूरिउत्साह॥ भां
तिभांतिकीभेटलैआएसवनरनाह॥१०२॥छप्पै॥ राजसूयपनपरच्यौसवैमुनिहूंहबु
लाए॥ द्रोनाचारजआदिसकलगुरुगनतहांआए॥ काहेजितकविधानतितेसव
साजसुधारे॥ असनवसनवहुभूरिभूरिभंडारउघारे॥ जांगेविदुरअरुहवं धुसवअ
तिहुलासचितछाइयो॥ अभिमानप्रकृतदुरजोधनौंनागानगरतेआइयो॥३॥दोहा

भा॰वि
८

राजे लोग सब आइ यो इंद्रप्रस्थ वितबाय ॥ लषि उद्भव कुरुवंस कौं सुरपति विभव ल
लजाय ॥ १३ ॥ पूजा कीजै कौंन की लागे करन विचार ॥ प्रथम कृस्न कौं पूजियैं यहै
मत्र मत सार ॥ १४ ॥ छप्पै ॥ महाराज हरि कौ नाथ जो दैं कुल नाइक ॥ सवन कियो ।
निरधार प्रथम पूजन के लाइक ॥ धर्मपुत्र मत मद्दित कृस्न पूजन अनुराग्यो ॥ कोपि
चंदेली कंपि वैनु कटु बोलन लाग्यो ॥ तिहि सीस चक्र षंडन कियो तहां रीति अद्भुत ठ
ई ॥ सिसुपाल अंग तें निकसि कैं जोति लीन हरि तन भई ॥ १६ ॥ लगी विरुध्धुनि होन संग गसु
र आनरपागे ॥ अपने अपने काज तहां नरपति सब लागे ॥ दुरजोधन कौं कृपन जानि
श्रीपति मन कीनौं ॥ सर्व दर्वि भंडार सो पिता के कर दीनौं ॥ बहुमान दान सु विधान क
रि महामोद विप्रन दयो ॥ भुव भ्रात सहित नृपनो थप मिराज नृप पूरन कियो ॥ ८ ॥
दोहा ॥ अधिक षरच ज्यों ज्यौं करैं धनतरा ध कोंनंद ॥ दुर्विडम गितेपो स्यो बढैं हरषि षि
स्यो नोमंद ॥ ९ ॥ सोरठा ॥ श्रीपति कृपा सु नृप राजसूय पूरन कियो ॥ आठे दिस के
भूप करि सनमान विदा किए ॥ १ ॥ रोला छंद ॥ राजसूय करि भूप किये अप ८

नोमनभायो ॥ राजसभामैंबैठिसबैपरिवारबुलायो ॥ प्रबल प्रतापगुमान भरोदुरयो
धनआयो ॥ अद्भुतसभाविलोकिचकितचितसंभ्रमछायो ॥ जलथलजानिनपा
ह्योधिसिलितहांअगडिगायो ॥ भयोभीतभटभेरअंधकौंअंधकहायो ॥ हस्योसभा
कौलोगसबैरनमां सहसायो ॥ भीमसैंनकेवचनश्रवनसुनिधरोरिसायो ॥ १२ ॥ दोहा
भीषमद्रोनसमेतिसबनागनगरकेलोक ॥ महामोदसौंआइपोअपनेअपनेओक
१३ ॥ भेटिअंकदुबमेटिसब मांगीविदासहेत ॥ हरिआएद्वारावतीअपनेहंदसमेत ॥ १४ ॥
रोलाछंद ॥ योदुर्जोधनदेषिसभा अपनेग्रहआयो ॥ आंनिईरषाभरीहियेमैंअति
अकुलायो ॥ अपनोमांतुलबोलिसबैबिरतांतसुनायो ॥ बेलिजुग्रधनलैहिसबैइहम
त्रहृढायो ॥ १५ ॥ छप्पै ॥ सकुनकुमंत्रीमिल्यौमनौपावकघृतनायो ॥ करैकलहकेमूल
कालहकोमूलउपायो ॥ धृतराष्ट्रसोंजोरिहाथदुरजोधनभाषी ॥ करीसभामैंहसी
मोममभामैंनहिराषी ॥ हमकरैंजुवाआरंभप्रभुबोलियधर्मसुतलीजियै ॥ अबमहारा
जबिनतीइहैइतनोंआयसदीजियै ॥ १६ ॥ मालती छंद ॥ धृतराष्ट्रवाच ॥ ७ ॥

भा॰वि॰
९

षुनी सुतवात ॥ कही सुनि तात ॥ ज्वा ग्रुति हींन ॥ कौरन कुलींन ॥ १७ ॥ उपद्रव मूल
षलै सुन कूल ॥ गुनी तिनि वास ॥ सुधर्म प्रकास ॥ १८ ॥ विचारि विवेक ॥ तजौ इह टेक
करौ कछु सांत ॥ उपाइ प्रधान ॥ १९ ॥ कहे प निवैंन ॥ रिसैं भरि नैंन ॥ करौं नहि ग्यांन
तजौं निज प्रान ॥ १२० ॥ दोहा ॥ जानि हही निज पुत्र कौं भाषी सहज सुभाय ॥ मंत्रि मित्र
करुं नूं गिके न्है पु कीजे जाय ॥ १२१ ॥ चौपई ॥ सवन बुलाय विदुर सौं कही ॥ महाराज
की ग्रज्ञा इही ॥ इंद्रप्रस्थ कौं ग्राज सिधावहु ॥ वोलि धर्म सुत कौं लै ग्रावहु ॥ १२२ ॥
षता नाग नगर ते धावौ ॥ निकट इधु षिरज के ग्रायौ ॥ वहुत प्रीति करि कंठ लगाए
कुसल वूझि ग्रहि हियैं सिराए ॥ १२३ ॥ करी कृपा कहहे त सिधाए ॥ महाराज तुम निकट
बुलाए ॥ तुमैं लैन कौं मोहि पठायौ ॥ वडे भागि इह दरसन पायौ ॥ १२४ ॥ दोहा ॥ ग्रनुज
न सहत सुजात रि ग्राए सो नृप जानि ॥ विदुर हुपद तन याहि लै गजपुर पहुंचे ग्रानि
१२५ ॥ छप्पै ॥ ग्राए कौं तिन पष वरि दुरयोधन पाई ॥ दूत सभा मैं वैठि जुवा की वात च
लाई ॥ धर्म पुत्र धर्मज्ञ कछू छल छिद्र न जानै ॥ षेलन लागे जुवा कपट के पासे

९

ठानै ॥ सवराजसमाजसंपतिसहतिनारिजीतिपलमैंलई ॥ पुनिभूमिभौनभंडारधर ।
हारिधर्मसुतकीभई ॥ २७ ॥ दोहा ॥ राजजीतितियजीतिकैंठहराईइहबात ॥ विपनवासबा
रहवरसएकवरसअज्ञात ॥ २८ ॥ ताहूपासेमैंभईदुरजोधनकीजीत ॥ ग्यारैंभ्योअन
चितकरमक्योंनहोइविपरीति ॥ २९ ॥ कूरसमुभिरिकूरसाववीपामपतिवुतनारि ॥ विनां
वसनचाहतकख्योरहोदुसासननहारि ॥ ३० ॥ सवैया ॥ भीषमद्रोनविलोकतद्रोपदीपैंचिकें
राजसभामहिआंनी ॥ द्वारिकानांथचक्रपानिधिकेसवदीनप्रकारतिआरतिवानी ॥ ता
हीसमैंपैवदेतनअंवरज्योंइमगेंगोपरवाहकोपानी ॥ हारिरह्योमनुमारिदुसासनखैं
चतखैंचतवांहपिरांनी ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ अनजनसहितअमातरिपुपुरतेंदिएनिकारि ॥ सं
गदुपदतनयाचलीपतिनीधर्मविचारि ॥ ३२ ॥ मोतीदामछंद ॥ पितामहद्रोणरहेंमु
हिमौंन ॥ कहेंसमझायकहेअवकौंन ॥ कियैदुरजोधनयोंउतपात ॥ चलेवनवीर
हियेअकुलात ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ अनुजनहूभ्रातावचनप्रतिपाल्योधारिधीर ॥ विप
नवसेवारहवरसदुखदुसहतजेसरीर ॥ ३४ ॥ वरसएककाहूपिकैरहेवर्सिभेवष

रिधीर॥ बीती अवधि विराटघर प्रगट भए नरवीर॥३५॥ दुर्मिलाछंद॥ पंडुतनय प्रगटे
विराटगृह बीती अवधि भलो दिन आयो॥ नागनगर धृतराष्ट्र नृपति सौं कहि तब पो
संदेस पठायौ॥ जुवा मे लिहम कह्यौं सु कीनौं दुख सुख भाल लिख्यो सो पायो॥ सुत सौं
कहौ विरोध निवारै राज देउ जो हमै वतायो॥१॥ भीषम द्रोन विदुर सब हिन मिलि उर
ज्ञो धन बहु विधि समझायो॥ करै गुमान कौं नकी मानै करै जग्य नहि चै न हरायो॥
दैहुं न भूमि अग्र ग्र सूची सम प्रतिउत्तर कहि यहै पठायो॥ बहू भए जुद्ध कौं उद्दत दुहूं और
थ आपन छायौं॥३७॥ चौपई॥ धृतराष्ट्र हसो धौलसो॥ निकट बोलि संजय सौं कहो
॥ समाचार उनके लै आवहु॥ बेगि आइ कै मोहि सुनावहु॥३८॥ उनके मन कौन
है चौ जानि॥ बल कितेक उर मैं अनुमानि॥ कौरो अजात सत्रु सौं जाय॥ तजै विरोध हस्ती
गम घाइ॥३९॥ संजय नृप कौं आयसु पाय॥ पहुच्यौ धर्मपुत्र ढिग जाय॥४०॥ दोहा
कुसल बूझि परिवार की लीनौ निकट बुलाइ॥ सुनि संदेस अपनी दसा कही सबै समु
झाय॥४१॥ युधिष्ठिरवाच॥ अब कहियो महाराज सौं वचन मति बहु तन प्रकार॥ कहै

अधर्मीपुत्रसौंहमसौंतजैनप्यार॥४३॥कहियोसबसमझायकछुदेषिचलेनिजग्र
त्त॥राजछाडिहमजाइकतकरौधरमकीपत्त॥४४॥समाचारसबदेषिसुनिसंज
यचल्योउताल॥पहुच्योजाइजहांहुतौधृतराष्ट्रनरपाल॥४५॥छंदमोतीदाम॥त
वैसंजयजायगहेनृपपाइ॥सबैसमझायकहीबहुभाय॥सदांउनकेउरकेवलधर्म
करैपरमारथकौहितसर्म॥१५६॥तजैनहिसत्यगहैंनअधर्मसौंप्रीति॥प्रसन्नप्रजाउ
नसौंसबभांति॥सदांतुमभक्तिसनेजुतहित्त॥विरोधधरैकबहूंनहिचित्त॥१५७॥अ
नीतिइतैनिरषीभरिपूर॥भएअबजुद्धकौंउद्धतसूर॥अधर्ममैंसमतितेनैंपरतत्त
करौकुलकंटककीतुमपत्त॥१५८॥इतीनतुमैंचहियैनरनाह॥लहौअपकीर
तिलोकनमांह॥जुसूजिपरीहमकौंचितमांहि॥करपूपरनामभलोइहनांहि
१५९॥कहौंकबहूंहमजानतहैंन॥विचारकौअपनेमनमैंन॥करेतुमपुत्रकितै
उतपात॥कितीविधिमारनकौंकरिघात॥१६०॥जुबाजवषेलिलिलैपांडवनजीति।
तज्योनतवहीकिनिजानिअनीति॥दियोइबनारसिभामहआइ॥सबैदुनिवातर

हे मुररराय ॥ १५१ ॥ तवैं सिष दै कहत ते प्रभु सांच ॥ सु क्यों न दहत ते अप लोक की आंच ॥ ५१
युधिष्ठिर और कही सब वात ॥ सभा मधि मे कहि हों प्रभु प्रात ॥ ५२ ॥ इती कहि संजय
कैं पर नाम ॥ समौं लषि सांझ गयौ निज धाम ॥ गयौ जब संजय आपने गेह ॥ दुही
त वसौ च महीपति देह ॥ ५३ ॥ निसां कहं भांति विता वहि भूप ॥ पर्यौ चित धारन चिंत के कू
प ॥ १५४ ॥ इति श्री महाभारथे उद्योग पर्वनि विदुर प्रजागरे आदि सभावन विराट प
र्वाणि नाम प्रथमो ऽध्याय ॥ १ ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ द्वारपाल कौं वोलि कै कह्यो महा
महिपाल ॥ देष्यौ चाहत विदुर कौं ताहि लाउ तत काल ॥ १ ॥ तोमर छंद ॥ सुनि हूत ग
यौ उह जो जहां छत्ता ॥ जब जाय प्रनाम कियौ अनुरत्ता ॥ इमि वैन कह्यौ म्हं दुमो दवि
सेष्या ॥ महाराज तुमैं अव चाहत देष्या ॥ २ ॥ इह वात सुनीत व हींड ठिधायौ ॥ चलि राजनि
केत महामति आयौ ॥ लषि भूपति सौ प्रतिहार जतायौ ॥ उन प्रीति के भीतर भौंन वुला
यौ ॥ ढिग आइ कही स्तुति अंजलि कीनौं ॥ महा भूप ऊतौ चित चिंत हली नौं ॥ छन
टेरि कै आपनौ नाम सुनायौ ॥ प्रभु हौं तुम आयुस पाइ कै आयौ ॥ ४ ॥ दोहा ॥ महाराज

जू विदुरहीं आयो अज्ञामांनि॥ कारजकहिवे हेत सोकहियेईसवमानि॥ ५॥ धृतरा
ष्ट्रवाच॥ कुंडलिया॥ पठयोहे संजय पविदुर धर्मपुत्रके पास॥ मेरीनिंदाकरिवहुत गा।
यो आपनेवास॥ गयो आपनेवास ग्रोर ऐसें कहिवात हि॥ कहे युधिष्ठिरवेंन सभामें
कहिहेंप्रातह॥ तवते चिंता वदीसवैडरकों मनठयो॥ वारवार पछितात ईहीकोहेकें
पठयो॥ ६॥ दोहा॥ कहाकहेगो वात वह इतीन जानी जाति॥ तातेनींदनआवई सो
च दहत मम गात॥ ७॥ अयल हत जोत कछु जागत दहत सुगात॥ धर्म अधर्मेकु
सलतुम कहो तात कछु वात॥ ८॥ तवते आयो सूतसुत सुनि पंडुनके वेंन॥ तवतेमे
रो मन विदुर रंचक लहेन चेन॥ ९॥ विकल होति इंद्रीसवै भई निसांअति घोर॥ यही
प्रवल चिंता वढी कहा कहेगो भोर॥ १०॥ विदुरवाच॥ छप्पै॥ दुरवल साधनहीन जु
सवलनतें मंडे॥ सर्वस जाको हरें कोउ छलसो चनछंडे॥ परतियसौं रतिकरेंका
मकेलीचितलावें॥ नित्तहरेपर वित्त ईनैनिस नींदनआवें॥ नरनाह होय एतेकहेक

भा॰वि॰ हूं पासइनसौं भयौं ॥ परविन्नलयेो चाहतकष्ट अधिक चिंतचिंतातयो ॥ २१ ॥ धृतराष्ट्र
१२
वाच ॥ दोहा ॥ धर्मसुन्यो चाहतकष्ट परमवचनकल्यान ॥ विदुरहमारेवसमैंतुपं
डितबुधिमान ॥ २२ ॥ विदुरवाच ॥ पंडितमूरिखजगतमैंद्वैमनुष्यकीवानि ॥ महा
राजतिनकेप्रगटलछणकहोवषानि ॥ छंदरोला ॥ सबैजानिप्रसत्तनिंद्यआ
चारउदंडैं ॥ आस्तिबुद्धिचितधरैंसदासरधामतिमंडैं ॥ क्रोधहर्षआहदर्पपैंचिचि
तसकैनजाकौं ॥ लाजनकबहूंधरैनामपंडितहैजाकौं ॥ २४ ॥ जाकेमनकोकृ
त्यमंत्रकोऊनहिजानैं ॥ भयोकाजदेषियेप्रगटसबजगतवषानैं ॥ मानिआप
कौमानगरवमनमैंनहिलावैं ॥ एलछणलषियेनामपंडितसुकहावै ॥ २५
उस्नसीतभयभीतएनजाकौनसंतापैं ॥ करैकष्टआरंभताहिकोऊविघनना
व्यापैं ॥ विमलबुद्धिअनुसरैंधर्मअर्थहअवगाहे ॥ पंडितश्रीरहरिइएकहीरीति
निवाहैं ॥ १६ ॥ सुषतेहोइनअर्थतिनेमनमेंअविलाषे ॥ अपनीसक्तिसमा १२

निज्ञात्तिकरिबोलनिरांषै॥ कारजकौअभिमानकछूजानेनहिहोई॥ करैनितोकारिसकैंकाजपंडितनरसोई॥१७॥ दोहा॥ जानिलेइजोतुरतही सुनैंवातचितलाइ॥ कामक्रोधसमहैंनहीजानैअर्थवनाइ॥१८॥ विनपूछेपरकाजकौजुक्तनकवहूंहोइ॥ लच्छनजामैंहोइयेपंडितकहियेसोइ॥१९॥ चाहनकौअलभ्यकीसोचनकवहूंहोइ॥ मोहनलहैंविपत्तिमेंपंडितकहियेसोइ॥२०॥ निश्चयकरिकारजकरैंहोइजुअंतरलीन॥ वृथाकालवैचैनहींपंडितउहैप्रवीन॥२१॥ गुनमेंधरैनदोषकछुचितसजैभ्रनिकरिकाजरजेंम्रारजकरमनमेंसोपंडितमहाराज॥२२॥ गीतिकाछंद॥ मनकौंकरैवसअपनेहरषैनहीसनमानते॥ अपमानलेनतपैहियौसरवज्ञहोइविधानते॥ पुनिचितदैमनहोइनिश्चलभंगाकेदहज्यौरहे॥ सववस्तुकेगुनकौंगहैमहाराजपंडितहैउहै॥२३॥ दोधकछंद॥ भूतनकेसवतत्वहिजानैं॥ कर्मनकेसवजोहियठानैं॥ प्रानिनकेजुउपाइउपावैं॥ जंत्रहदेषतअर्थवतावै॥२४॥ जामतिकैसवसास्त्रलगावै॥ शास्त्रनकेसंगजोमनलावैं॥ जोमरजादतजैनपुरानी॥ सोकहियैनरपंडितज्ञानी॥२५

नराजछंद॥ मदंधजामुनेंनहींगुमानजीघनोंधरें॥ हरिउभौंनमेंपत्योमनेंमहावडोकरें
धरैजुआसअर्थकीउपाइकोंविनाकियैं॥ करैविनाविचारकाजमूढसोवषानियैं॥२३
दोहा॥ जोसेवैपरअर्थकौंअपनेअर्थहि षोइ॥ मिथ्याकहिमित्रहूछलेमूरषकहियेसोइ
२४॥ छाडेवांछितकाजकोंपचेअवांछितचाहि॥ वैरकरैवलवंतसौंमूरिषकहियेताहि॥२५
॥सवैया॥ सत्रुहिमित्रकरैअपनोंनिजमित्रहुवैरुकेमारिवोठानें॥ सेसयहीसवठौरधरें
उरकर्ममलीनकरेंरुचिमानें॥ सत्वरकाजकरैचितलाइसवैजगमेंनिजकृत्यवषानें॥
नीतिकीवातसुहाइनजाकुंपंडितताकुंमूरषजानें॥२६॥ छप्पै॥ कवहुनकरैंसराध
सुरनकोकरैनअर्चा॥ लाजनकवहूधरैंकांनसुभनैंनचर्चा॥ अनवोलैंधसिजायवि
नापूछैंसोभाषै॥ नहितासोंविस्वासमिल्योतासोंमनराषै॥ कछुदोषलगावैऔरकौं
आपुकरनसोइचहै॥ अरुकरहिकोपअसमर्थनरमूरषकोलछणइहै॥२७॥ भुजंग
प्रयातछंद॥ वंलैआपनेजोनहींजीयजानें॥ तजेअर्थधर्मैंवृथावादठानें॥ विनाका
मकीयैअलभ्याजुचाहैं॥ वहेमूढताकोंनकोऊसराहै॥ २८॥ सिषांवैतिनैसीषजोजो॥

गपनांहीं॥ करहैं जे भजें मूल्य सेवै वृथा हीं॥ घनौं छोडि जो अल्प के हेत धावैं॥ करे अन्यथा
मूढ सोई कहावै॥३३॥ दोहा॥ पारखें डो एश्वर्य अरु विद्या अर्थ समाज॥ विनय सील छोडै
नहि सो पंडित में न राज॥३४॥ पहरें सुंदर वसन अरु स्वाद वस्तु जो षाइ॥ विनां दियें अन
चरण कौं घातक कहियै ताहि॥ ३५॥ एकैहां पातक करै सुष भुगतै वहु लोइ॥ सुषभोगी। म
छूटै सवै कर ता दोषी होइ॥३६॥ सोरठा॥ छूटै धन षतें वान हने किए के ना हनैं॥ वुधि सर अ
ति वलवान हनैं राज कुल देस जुत॥३७॥ द्वै न हवै कैं करि एक सौं चरित्र सु करि वस मन आनि
पांच जीति छह जानि अरु सात छाडि सुष मानि॥३८॥ अवसा पात्म कता कहत एक वु
द्धि नर वीर॥ ताकरि धम अरथ मै है न है वै करि निधीर॥३९॥ साम दाम अरु दंड कहि भेद
उपाय सु चारि॥ ताकरि मित्र हदास अरि त्रिय वस करहु विचारि॥४०॥ द्वै विधि विग्रह संधि
अरु आश्रय पलासन जानि॥ जीतहु इंद्री पांच ए जानहु छ विधि निदान॥४१॥ काम क्रो
ध मद लोभ अरु तृष्णा मत्सर मोह॥ सात छाडि संसार मैं सुषी सकल विधि होइ॥४२
विषास मारै एक कौं सास्त्र एक कौं काल॥ सहित देश नासै प्रजा मंत्र चुकित भूपाल॥४३

॥सवैया॥ भोजन स्वाद अकेलो करै न अकेलौ हि अर्थ सभा मैं न पागैं ॥ दुर्जन सों न अ
केलो मिलैं तरुनी सों अकेलौ न वात न लागैं ॥ पंथ मैं धाय अकेलो चलैं न अकेलो
न सूने घरै गहवागैं ॥ सोवत हैं वहु लोग जहां न तहां अपु अकेलो अगार न जागैं ॥सोरठा॥
सत्य स्वर्ग सोपान जैसें वोहित उदधि कौं ॥ नामस औरन आन जानत भूप कहा न तु
म ॥४५॥ छिमावंत कौं जानि लोग कहत असमर्थ हैं ॥ सोर ह दोष न जानि छिमा वडो
धन जानि ॥४६॥दोहा॥ उत्तम धन छाडै छिमा हिये धरै अति रोस ॥ जानि वूझि यह पाप
कौं वडौ लगावत दोस ॥४७॥दोधकछंद॥ श्रेय वडो इक धर्म वषान्यो ॥ उत्तम सांति
मा उर आन्यो ॥ तृप्ति वडी इह विद्या जानौ ॥ एक अहिंस वडौ सुष मानौ ॥४८॥ भूमि गहै
इनि दुहन किया वैं ॥ ज्यों अहि मूषक कौं गहि लावैं ॥ भूपति नैं न विरुद्ध वढावैं ॥ पंडित वि
प्र विदेस न धावै ॥४९॥दोहा॥ या जग मैं द्वै कर्म करि नर पावै अति चैन ॥ आप अपकारन
नीच कौं क्रूर वे कहे न वैन ॥५०॥ महाराज या जगत मैं द्वै प्रतीति के धाम ॥ वडी गैर
जो मानियै अरु तिय कामित काम ॥५१॥ द्वै कंटक तीक्षण महा देह सुषा मन

अर्थ॥ अधनकौंरचितकांमनाकोपकौरेअसमर्थ॥५२॥रविमंडलकौंभेदई द्वैजन
पुण्यसमाज॥जटिलजोगमेंकुसलअरुरनमुषहतमहाराज॥५३॥द्वैजनएथा
जगतमेलहैंनसोभाराज॥उद्यमतजेगृहस्तअरुजतीकरैसवकाज॥५४॥महारा
जएद्वैपुरिषस्वर्गवसैवडभाग॥धर्मसहतिभूपतिवलीकरैदरिद्रीत्याग॥५५
द्वैप्रकारतेहोतहै धनकौहाननिदान॥दानपात्रअपमानकरिदेइअपात्रहिदान॥५६
वांधिगलेसिलडारिएएनरद्वैजगमांहि॥दारिद्रीतपनातपैंधनीदांनरतनांहि॥५७
उत्तिममध्यमअधमनरत्रविधिजानियेभूप॥जेष्टामधअकनेष्टएल्याइजहांअनरूप
५८॥जुक्तितिहींविधिकरतहैंतीनिभांतिकेकर्म॥तिनहीकेफलभोगवतप्राणीधर्मअ
धर्म॥५९॥सोरठा॥पतिनीसुतअरुदासएतीनोंनिधरकसद॥वसहुअभूपनवासजा
केएहितकवसे॥६०॥दोहा॥ हरेपरायोदरविअरुपरतियहितअनकूल॥छाडैसेवा
कारतहीएतीन्योछयमूल॥६१॥कामक्रोधअरुलोभएद्वैलेनरककेद्वार॥तातेएती
न्यौंनकौकरैसदांपरिहार॥६२॥भक्तहोइअरुपुद्दचित्तभजेमनावचेकाइ॥होतेरो

एवचनकहिसुघीरैहैजोआइ॥६३॥इत्ताइनतीन्यौनकीसदांकौरैजौंकोइ॥इनकौ।
पीठिनदीजियैसंकटहूजोहोइ॥६४॥राजलाभवरदानअरुपुत्रजन्मसुषमूल॥
पकरिछाडियैसत्रुयहएकातिन्हैसमतूल॥६५॥मालिनीछंद॥नृपतिवलुसभारै
चारिएईनिवारैं॥मिलिनतौनांविचारैं॥दीर्घसूत्रीनिहारै॥६६॥लघुमतिजहहोइहो
इजौभाउकोई॥अलपएत्रकृतिजानैं॥मंत्रतासौंनठानैं॥६७॥चौपई॥अरतिजाति
सुदीनकुलीन॥मणिनीहोइसुसंपतिहीन॥सभादिरिद्रीसमैंविचारि॥वसैसपूतस
दनएचारि॥६८॥चाह्यौहोततुरतहीतात॥भाषीइहैवृहस्पतिवात॥पूछीप्रथमसुजन
केराय॥तौहौंकहांसुनौंचितलाइ॥६९॥देवनकौसंकल्पसुभाव॥अरुवुधिवंतनकौ
अनुभाव॥कृतविद्यपनकौविषयविलास॥पापकरमकरित्ताकौनास॥६९॥मातापित
आत्माजानि॥आचारजपावकउरआनि॥पांचौजानैअगिनिसुभाव॥सावधानसैवम
नलाय॥७०॥दोहा॥पांचनकीसेवाकरैजसपावैपालोक॥देवपितरनरअतिथिअ
रुभिचुकआवैस्रोक॥७१॥सोरठा॥मित्रअमित्रउदासउपजीवीउपजीवजन॥ १५

एहिहैं तोपासजहां जहां तूं जापगो ॥७२॥ दोहा ॥ नरकैं इन्द्री पांच जौं एकै भले नर वीर
बुद्धि तही मग श्रवत ज्यौं मसक छिद्र तें नीर ॥७३॥ तोमर छंद ॥ नर चौहे सं पति भूरि ॥
घट दोष दारा हि हूरि ॥ भय नीं दश्रालस मांनि ॥ रिस सो चरीरघ जानि ॥७३॥ छपै ॥ श्राचा
र जग हि रहैं मौनं मुष वैंन न भाषे ॥ रिखि जपढै न वेद न पनर द्दा ग्रविलाषै ॥ पति नीक
है है कैं रवचन हित जौं न निवाहैं ॥ मगल चहै चित गवार वस्यौ नाउ व च नैं है ॥ षटदोष रा
ते जे गई पुरिषि जो चाहै चिरआपको ॥ गाहि हूरि सलिल तें डारिय ति जैसैं टूटी नाव
कौं ॥७४॥ दोहा ॥ अनसूया धीरज छमा श्रनालस श्रह दान ॥ सो तिस हति ए छगुन नन
र कबहूं तजे न जान ॥७५॥ पवंगा छंद ॥ सेवा गाइ सिल पवित्र ग्राउर अंग्रानियैं ॥ बतीश्रो
रनौं वसं गतिजिय जानियैं ॥ ए घटल है है विनास नन भारियै ॥ इन सौं श्रंतर एक घरी ही
न हि पारियै ॥७६॥ छंद पद्धरी ॥ महा नमूढ कैं कैं पुढै जाय ज्ञा सौं ॥ भए सिद्धि विद्या क
ला का मता सौं ॥ जहा भा मि नी भौं नै मैं जोति मूंडै ॥ कि हूं दाप सौं माय सौ मोह छूंडै
जबै कामिनी कामना हूरगाहैं ॥ तवै सुंदरी कौं रती कौन चाहै ॥ जबै चाहत सिद्ध

भा॰वि॰ काजपावैं ॥ तवै साधनैं चित्त हू मैं न लावैं ॥ तैरैं नीर के नाव कौं को निहारैं ॥ गयें रोग
१६ रोगीन वैदेस भारैं ॥ सदां एक ही रीति यों ए निवाहैं ॥ छहो एन सूर्वीप कारी महा हैं ॥
१९ ॥ चौपई ॥ होइ जु रोग हीं न रिन हीन ॥ हृत्ति होइ स्व अपने आधीन ॥ सतसंगति नि
रभै वसवास ॥ निग्रह छ्या डिन लहै प्रकास ॥ २० ॥ एतर लोक छ ओ सुख साज ॥ औरौ
छह सुनियै महाराजा ॥ चिंता रहित हर विनित पावैं ॥ आपु कारिजी विद्या आवैं तिय
कै है प्रिय आपु प्रवीन ॥ सुतस पूत होइ आधीन ॥ २२ ॥ दोहा ॥ असंतोष जाकें सदा को
धी संकावंत ॥ ईर्षा सहत मलीन मन पराधीन जीवंत ॥ २३ ॥ एई छह या लोक में ल
हैं नहीं सुख साज ॥ दुखी नित्त ही जानियै महाराज कूराज ॥ २४ ॥ पांचो इंद्री मन सह
त जीति करे वस कोइ ॥ पाप न रहैं अनर्थ तह कहै कहा ते होइ ॥ २५ ॥ सुदरीछंद ॥ जीव
ते चोर सम तन सों अह वेद जियै उत रोगन सों ॥ जीवत है जिज मानते भिच्छुक को ।
मिनि काम के भोगन सौं ॥ अपजियै उमरा वन सों अरु पंडित मूरष लोगन सों ॥ ।
जीवत ए इन हीं छह तें छ सात अओ पैयत योगन सो ॥ २६ ॥ कुंडलिया ॥ छाडैं नपसा १६

तौविसनएविनासकौअंग॥सुरापानमृगयाजुवासुदाकामिनीसंग॥सदाकामि
नीसंगवैनमुषकरकवषानैं॥दंडकरैअतिकठिनिअर्थलषिदुषःनठानैं॥लहैन
संपतिसोभजगातअपकीरतिमेंइ॥वैरीलेइदवायजौनएसातौछुटै॥८७॥आठौध
र्मविनासकेकारनकहोंवषानि॥जौचाहैकल्यानतौइनकौंछाडैमानि॥८८॥स
वैया॥विप्रनसौंजियद्वेषधरैंअरुविप्रनसौंजुक्रोधवढावैं॥लेइजुविप्रनकेधनकौं
हरिविप्रहमारिवेकौंमनलावैं॥विप्रनकीनितनिंदासुनैंपुनिविप्रवडाईसुनैंदुषपा
वैं॥वोलैनविप्रनकेसुषकाजमैं॥मागतविप्रहदोषलगावैं॥८९॥दोधक छंद॥जौकहू
हाथवडोधनआवैं॥जोमनवांछितसोफलपावैं॥भाषिवौवातसभामेंसुहातौ॥फूलहि
भेटिलगाइवौछातौ॥९०॥भूपसभामहिआदरपैवौ॥आपनीजातिमेंऊंचौकहैवौ॥
मित्रमिलेतिवसौंरतिमानैं॥आठउएसुषसारवषानैं॥९१॥दोहा॥कुलकृतदानादान
दमवेदपुरातनपाठ॥वहुसुनिवौवहुभाषिवौतेमवढावतआठ॥९२॥घाताछंद॥पां
वभूतकौरच्यौपवनइकतामैंतीनिछुनींनवद्वार॥आतमपुरिपरमिरहौभीत

तर जानै सो पंडित निरधार ॥९३॥ कुंडलिया ॥ जानत धर्म न एक हू सो पुनि इतराव एधी
र ॥ अति चिंतत अरु वावरो वडु अग्रथ कैसो सरीर ॥ वडु अग्रथ कैसो सरीर भीरु लोभी
अरु छिद्र खोजित ॥ अति उताइलौ होइ काम लंपट पुनि क्रोधित ॥ ता ते इतने भाव सम
झि बुध निरखवा नत ॥ इनके वसन हि होत जगत मैं जे कछु जानत ॥९४॥ चंपक छं
द ॥ जो न लपकाम ह क्रोध ह छंडै ॥ वित्त हदै षेद्रा न ह मंडै ॥ सो सब वातन की विधि जानै
गंथ सुनै सो पाठ पुरानै ॥९५॥ कारन कौं जो ढील न लावै ॥ जो सब कौं विस्वास वढावै
जो सब कालन की गति पावै ॥ लोग सवै ता कौं सिर नावै ॥९६॥ देसन की जो विद्या
विचारैं ॥ दोष विचारि सो दंड ह धारैं ॥ वात वषानैं जो मन वच छी ॥ ता नृप कौं सेवे सव
लछ्छी ॥९७॥ दुरवल कौं न करे अपमानैं ॥ जो न विरोध वलीन सौं ठानैं ॥ वुद्धि सो वैर
हि सेइ हु जानैं ॥ दुषित मौं जु पराक्रम आनैं ॥९८॥ आपत मैं मन हीन न भाषैं ॥ उद्यम
मैं चित चौगुनौ राषैं ॥ जीति मनैं दुष हू कौं वितीतैं ॥ वे तिन सौं इधुरंधर जीतैं ॥९९॥ जौ
नर पापन कौं सग छंडै ॥ जो पर दारसौं प्रीति न मंडै ॥ जो चुगली न अरूचौ सहित्यागै

जोमद्यपानकेरंगनरागैं॥जोनविरोधहूथांउपजावै॥सोमहाराजसदांसुषपावै॥२००
॥कवित्त॥गुनमेंनदोषभाषेवूझेंसांचीवातभाषेंकापकौंनकरैकछूकियोचाहेकाज
सो॥अलपप्रयोजनकौंकरैनवित्तचितचिविनहीकृपायैंकोपकरैनअकाजसो॥व
डिकैंनवोलैवढिवोलैतासोंछिमाकरैंहूवरैसोंमगरैनलाजकोजिहाजसो॥सवहीपैद
याकरैसीलकोसुभावधरैंपावैजससजगअवडाईमहाराजसो॥२०१॥दोहा॥सज्जैन
उद्धतवेषअरुसुषतेकटुउचरैन॥सोसवकोंप्यारोलगैनिजविक्रमवलगैंन॥२०१॥
नगुमान रहेचढ्योगिरिअरुसनकवहूहोइ॥गर्वोनवेरुउघारियेवडोकहावैसोइ॥२०२॥सं
कटहूमैंनाकरैसोअनकरणेकाज॥जाकोंआरजसीलकाविभाषतहैंमहाराज॥१०३
परदुषलषिहरषैनहीनिजसुषमेंनसुध्याय॥आरजसीलसुजानियेहेनहियैंप
छिताइ॥१०४॥जानिधरमअरुहसमपगतिजानैंदसाचाल॥अगिलीपिछिलीवात।
कोजोचितकरैविचार॥१०५॥होंनहारआगमलिषैजानैसवव्योहार॥जहांजाइ
तहांहोइवहसवहीकोसिरदार॥१०६॥मदरुमोहमत्सरगरवपापकरमअरु

भा॰ वि॰ घेरु ॥ राजदोष चुगली अनंत अरु वकुतन सौं वेरु ॥ ८ ॥ दुर्जन नवै रामंत्र सौं उघरौ मंत्र
१८ विचारि ॥ बुद्धिवंत जो ईत जै सो कहियै तिरदार ॥ ९ ॥ मंगल कार जदेवि कै जो घर चैपर
विन्न ॥ डरै लोक अपवाद ते करै जु प्रायश्चित्र ॥ १० ॥ इंद्रय नग्रह सौं चल्यौ साधन धरम
सहित ॥ ता के करतलहाइ कौं आइ देवता नित्त ॥ ११ ॥ कीजे आप समान सौं वैर प्रीति
व्यौहार ॥ कवहु न कीजे नीच सौं चरचा कथा विचार ॥ १२ ॥ गुन उत्कृष्ट प्रधान सो नृ
प कैं आगे होइ ॥ ताकी नीति निहारि कैं आइ न सेस व कोइ ॥ १३ ॥ चौपई ॥ अरि है जु जाचै
आनि न हीता सौं न हि भाषै ॥ परमित करै अहार अलप निद्रा अविलाषै ॥ अमि
त करै जो करम आतमा वस करि गाजै ॥ ताहि अनर्थ समूह दूरि है ते तजि भाजै ॥
७ नि का म कि पे चाहे कछू भेउ न अरु कोऊ लहै ॥ विगरै न कछू ता भूप को मंत्र
सत्ता को रहै ॥ १४ ॥ गीतिकाछंद ॥ मदहोइ सील लघु भाय कौं सव को करै सनमान जू ॥ स
व जानि लक्षण सभा के नर होइ परम सुजान जू ॥ सव जाति मैं पो जानि यैं मनि मांह जै है
जो तिजू ॥ उपकार सो सव पै करै रहरी तिजाकी हो तिजू ॥ १५ ॥ पवंगा छंद ॥ सावधान के १८

जो आत मरत्ताकौ रै॥ सबलोगनकीनहचैंगहताई धरैं॥ अग्रतेजसांमंतहंद्रजास
गरैहैं॥ सूरजकौसौतेज भूपसोईलहै॥१६॥ चौपई॥ वनमैंभए पांडु केपूत॥ पांचौ।
मनौंआपपुरहूत॥ तेतुमहीं पाले सुषसाज॥ अवतिनकीतुमहींकौंलाज॥१७॥ तुलसी
अज्ञापालतज्ञामैं॥ तुमहीसीषसिषाइवसामैं॥ तिनकौंराजुदेउमहाराज॥ होउसुषी
सबसहितसमाज॥१८॥ दोहा॥ जौदेहोमहाराजतुम पंडुसुतनकौंराज॥ तौतुम्हरौसु
रअसुरनरसमताल्हैनआज॥११९॥ इतिश्रीमहाभारथेउद्योगपर्वनिविदुरधृतराष्ट्र
संवादेविदुरप्रजारेद्वितीयोऽध्यायः॥२॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ अयलहोजातेकछूजा
गतरहतजुगात॥ धर्मअर्थमैंकुसलतुमकहिकछुउत्तिमबात॥१॥ धर्मपुत्रकौहि
तविहतजौजियजाननतात॥ अवतूमासौंकहिविदुरज्योंकीत्योंसववात॥२॥ पापा
सकीपापमतिपापेसूजतमोहि॥ व्याकुलमनअकुलातअतिताते बूझततोहि॥३
कहाकियो चाहतसुवेपंडुतनयमतिषांन॥ कुसलहोइकुरुवंसमैंकहविधिपर
मसुजान॥४॥ विदुरउवाच॥ प्रियअप्रियसुभकेअसुभजरपिनपूछौआय॥ जा

कौंहितचितचाहियैंकहियैताहिवनाइ ॥५॥ ताततेंअवमहाराजकौंकहतसुनौंइह।
वात ॥ कहूकालकौकल्यानकरवचनधरमअवदात ॥६॥ भोगविलतकीएजतन
सिद्धिहोतिसुषदाइ ॥ तिनतेमनुनडचारियैंकारजजुक्तउपाइ ॥७॥ सानुवंधुकार
जेकरैंएअनुवंधनिहारि ॥ करैनसहसावुद्धिवलपंडितकरैविचारि ॥८॥ कारजको।
अनुवंधलषिअरुउत्तरफलचारि ॥ पुनिअपनौंसमिर्थ्यलषिकरैकिनकरैताहि ॥९॥
दोहा ॥ देसकोसअरुपुअगांनहांनिवृद्धिसुभअसुभकौं ॥ जोमैंजोनप्रमानजाकोराजन
होइथिर ॥११॥ जोइनकोपरिमाननृपकरैजथाचितचाहिं ॥ धर्मअर्थविधिमैंनि।
पुननृपतातेंजैनताहि ॥१२॥ सोरठा ॥ जोनपडतमनीतिराजपाइवरतैनही ॥ लछिमीहरैं
अनीतिज्योंवुदरहरुहजेरा ॥१३॥ दोहा ॥ तेसेऊपरभत्तालछिमछुःवलीभिदिजात
तैसैंलोभीअर्थलषिलषैनआतमघात ॥१४॥ चौपई ॥ मछोःजाइभक्तिवेलारक्त ॥ पु
षसांपचैहोइगुनदाइक ॥ जौचाहैसुषचैनअपार ॥ ऐसैंकरैविचारिअहार ॥१५॥ दो
हरा ॥ फलअपक्कजोवृत्ततेतोरिलइनाकोइ ॥ फलकौरसपावैनकछुनासवीजकौ

होइ॥ नासबीजकोहोइ इहैनिजचित्तविचारै॥ पकेपकेफललेइ सुमें परिपाकनिहा
रै॥ पक्कपक्कफल षाइ स्वादरसलहैवुद्धिवल॥ फलतें पाकेंवीज वीजतेहोइ वहुरिफ
ल॥१६॥ दोहा॥ जैसेंभौंराफूलकौंरापतरसकेहेत॥ ऐसेंनृपतिप्रजानकौं विरचिधि
नलेत॥१७॥ फूलेफूलनलेइ चुनिकरैनजरतेनास॥ पुरविलेइ हिं सा विना सोनृप
नीतिनिवास॥१८॥ जैसेंमालीवागकौंरापतहितचितचाहि॥ जैसेंजोक्रोलाकरतक
हापरदहैताहि॥१९॥ कालामोहिकरनोंअवेकहानकरनोंआहि॥ यहविचारिचितरा
षिनरकैरकैरनहिताहि॥२०॥ राषिनलेतुप्रजाहिजोनृपदुवगृपकर्मितैं॥ प्रजानवा
हतिताहिज्योंतियघोजापुरुषको॥२१॥ जेअनकारिवेजोगहोतजातकारजकिते॥
तिनतेउद्दिमलोगकरैंवृथाश्रमतेलहै॥२२॥ दोहा॥ अलपजतनतेहोतअरु
करैंमहाफलहोइ॥ तेकारजसत्वरकियेविघननव्यापैकोइ॥२३॥ सूधीहूत्र्यां।
षिनलषैंप्रीतिरीतिसोचाहि॥ चुपहूनृपवैठ्योरहैसोसुषदेतप्रजाहि॥२४॥ ज्यों
नोंहिफल्यौफल्यौंफूलनआवतहाथ॥ लोंपक्योसोंअनपक्योसाननसेइयेना।

भा·वि·
२०

ष्य ॥ २५ ॥ चितमनि श्रुतकाममनवचन करतु प्रसन्न प्रजाहि ॥ प्रजाअधिक
सुषपाय चित हितसौं चाहत ताहि ॥ २६ ॥ लहै समुझावधि मही चिरन भोगवै ताहि
जानैं सब प्रानी डरैं ज्यौं मृगवधिकहि चाहि ॥ २७ ॥ गीतिकाछंद ॥ नृपजो सनातनध
र्म कौं आचरतु राजहि पाइकै ॥ वसुधा सदा ताकौं वढैं वसु भूरि भूमि वढाइकै ॥ २८
तजि धर्म उत्तिम भूप ठानि अधर्म मंडै कर्मजू ॥ महि होति तिन कौं संकुचित ज्यौं अ
ग्नि जारै चर्मजू ॥ २८ ॥ दोहा ॥ कीजै जतन विचारिकैं जो परमर्द्दन काज ॥ सोई कीजै
निजनगार रक्षण हित महाराज ॥ २९ ॥ लहै धर्म तै राजपद्दु पालै धर्म हठानि ॥ धर्मम्हा
लेलछि मील है होइ न कबहू हानि ॥ ३० ॥ मधुप हू वल गैवकें वालक हू विननेम ॥ साह
तेहू लेली जियै ज्यौं पाथरतै हेम ॥ ३१ ॥ चौपई ॥ बुधिवंतनके सुंदरवैंन ॥ उत्तम चरितजु
निरषैं नैंन ॥ तिनहीके गुन गहै विचारि ॥ ज्यौं चुनिलेति सिलौ सिलहारि ॥ ३२ ॥ स
६ माहितछौ ॥ पसू सुगंध ही लषै लषै द्विजाति वैद हष्टि ॥ लषै महीसु हूतनैंन चरहु
दार अक्षौं विसिष्ट ॥ ३३ ॥ पावै अधिक कलेस जो धेनु दुहइ हा होइ ॥ ताहि नवावै कौं न २०

धौंनयोश्राप्रहिहि इ॥३५॥लहैहिं इक्कोभोगजोनवलुवलीकोश्रानि॥पंडितपहलैंहिंन
वतइहविचारजियश्रानि॥मेघपपनकोंपरमप्रियनृपमंत्रिनकोंजानि॥पतिहिप्री
तमतियनकौंवेदविप्रपवखानि॥३७॥छप्पै॥धर्मसत्यतेरहैरहैविद्याश्रभ्यासवल॥
उवरैचुपरैंरहैरूपश्रचारगहेकुल॥चैदृयथाक्रमतनुगमीतमइम्रघृतेवालैं॥सेवाकी
येगाइश्रन्नरहैपूरीतालैं॥तियरहैप्रीतिपतिकीलहैंगुरुभूपनपटमंडियें॥कविकृ
ष्णप्रीतितवहीरहैकपटहिएकोछंडियें॥३८॥दोहा॥उत्तमकुलश्राचारविनकौरेप्र
माननकोइ॥कुलहीनौंश्राचारजुतलहैवडाईसोइ॥३९॥रूपसीलकुलवित्त
वलगुपसोभाततकार॥देषिश्रोरकोजोकुढैताकोरोगश्रपार॥४०॥जाहिप्रियेसतु
रकरैंजेश्रुनकरनेकाज॥ताहिपियेकारजतजैंतेकरनैमहाराज॥४१॥विनासैम
पघरकैंरगहमंत्रपीजाइ॥मत्तहोइजाकेपियेंकवहुनपीयेताहि॥४२॥विद्याउ
धमकुलजनमवहुधनरूपउदार॥नीचनकोइनमादकरिसंतनकोश्रृंगार॥४३
पूजतसंतश्रसंतकोंकवहुकोंनहुकाज॥वहमनिलमनश्रापकैंसंतनकोसिरताज

भा॰वि॰ २१ ॥सोरठा॥प्राणिनकौंगतिसंगअसतिकोसमगान्तिहैं॥संतनकौंगतिसंतनहिअसं
तगतिसंतकौं॥छप्पै॥पहरैभूषनवसनसभानरजीतैसोई॥जीतैभोजनस्वादजागु
रहगोधनहोई॥जीतिजगतकौंलेइसीलजोसदानिबाहैं॥जाघरवांहूनहोइजीति
पथसेअवगाहैं॥कविकुलमकहैजापुरिषकौंसीलसुभावनजातुहैं॥किहकामधं
मधनतासुकौजनमअकारथजातुहैं॥दोहा॥स्वामिषहीभोजनवडौजिनकेद्रव्य
अपार॥मध्यममांनतअधिकरुचिजियजानतमहाराज॥८५॥सोरठा॥अन्नद
रिद्रीषातसोरुचिमांनतचित्तमैं॥धनवंतनकौतातसोरुचिदुर्लभसपनहू॥८६॥
तिनकैंलक्षअपारातिनकौंनहिभोजनसकति॥जेनिरधनसंसारजेपचवतहैं
काष्ठहू॥८७॥दोहा॥उत्तमनरअपमानतेडरपतसीलसमुद्र॥मरिवेतेमध्यमडर
तवृत्तिनासतेक्षुद्र॥८८॥मदिरातेएश्वर्यमदुदाहनअधिकसुषाइ॥उहउतरैअप क
५ नेसमैउहविनविपतिनजाँ॥८९॥सोरठा॥दुर्बुद्धिअर्थहिपावदौरतगहिराबतनए
तिनकौंलेतदवाइतेसैंगहननत्रत्रपति॥९०॥दोहा॥पंचोइंद्रनसहजही २१

जीतेपेसोमतिमंद॥ ताकौंवाढतिश्रापदाश्रुकलपत्तज्योचंद॥५४॥चौपई॥श्रात
मजाकेवसनहिहोई॥ मंत्रिनकैसेंजीततसोई॥ जान्यकैंम त्रीवसनाहीं॥ तापैंग्र
रिक्योंजीतिजाही॥५५॥दोहा॥जोजीतेनिजश्रातमावैरीजोचितचाहि॥ सोजीतेस
वतसवलमंत्रीमानतताहि॥५६॥चौपई॥जौनपरंद्रिनकौंवसकरैं॥ मत्रिनहूंकेमन
कौंहरैं॥ सपराधिनकौंदेहिजुदंड॥ सेवैलछिमीताहिश्रखंड॥५७॥कुंडलिया॥रथ
सरीरपापुरषकोताकेइंद्रीवाज॥ रथीविराजतश्रातमांचक्रमनोरथसाज॥ च
क्रमनोरथसाजवाजश्रतिचंचलश्राही॥ जितहीकौंमुषफेरैंवेचिततकौंलैंजाहि॥
ज्ञानरज्जोजोवंधिधीरजैांकरैंश्रपुहथ॥ कठिनपंथसंसारभलौताकोपहुचैरथ
५८॥दोहा॥जाकेचोरात्र्यनसधेश्रौरसारथीकूर॥ ताकोरथपहुचैनहींहोइवीच
हीचूर॥५९॥लषैश्रनर्थहिश्रर्थमैंश्ररर्थश्रनर्थहिजानि॥ सोमूरिषसंसारमैंले
तदुषसुषमानि॥६०॥धर्मश्ररर्थकौंछोडिजोइंद्रनकेवसहोइ॥ वामधामधन
प्राणकौंनासलहैनरसोइ॥६१॥विषयनतेंईश्वरमयेइंद्रनहींवसजाय॥ इंद्रिनु

कै ए ऐश्वर्य्य विनसवए ऐश्वर्य विनास ॥ ६२ ॥ सवैया ॥ आपु ही आपने पे कौंल षैं अहि इंद्रि
य बुद्धि मनौं वस आनैं ॥ आपु कौ है इह आपु ही मीत अमीत हू आपनौं आपु कूं जानैं ॥
आतमा जीति कियो अपने वस ता ही कौं पंडित मित्र वषानैं ॥ आतमा ताऐं न जी।
त्यो गयो वह ताही कौं वैरी विकार हू ठानैं ॥ ६३ ॥ चौपई ॥ काम क्रोध एम ष्प करालं ॥ रोकन
अलप बुद्धि के जालं ॥ निकसत इंद्री छिद्रन पाइ ॥ याकौ रोकन गिलत तिहि भाइ ॥ ६४ ॥
दोहा ॥ धर्म अर्थ कौं देषि कैं करैं जु सामा सान ॥ सो अनंत सुष भोगवै महाराज कुरुराजे
६५ ॥ या ही के मन ते भए पांच सत्रु या मांहि ॥ तिनके विन जीतैं कहो अरि क्यौं जीते जां
हि ॥ ६६ ॥ सोरठा ॥ राजसाज भूमि जात इंद्रिन वस न हि करत नृप ॥ ते पापिष्ट लषा
त मारे अपने करम के ॥ ६७ ॥ सवैया ॥ पापी की संगति छोडे न जानि कैं वीस विसे वह।
पापी कहावै ॥ पापी कौ संग कियैं मन कौं मन दुष्ट वरावरि पापी की पावै ॥ जो न ही मानैं
तो दृष्टांत सहीं याकौं कहा कोउ जु लषि वतावे ॥ आलो हू होइ जो सुषे के साथ हू तासन।
दो जन ही कौं जरावे ॥ ६८ ॥ चौपई ॥ पांडु पुत्र पा ही ते भए ॥ तिनहू पांच प्रयोजन ठए ॥ दुपसर २२

रसगंधवषान॥ सपरसएपाचौपहचानि॥ राजकुरंगझषभंगपतिंग॥ विनसैंएकएकोंके
संग॥ जौएकहिएपांचौलागै॥ जाकौकौनञापदाभागै॥ ७०॥ छप्पै॥ दानदयासंतोषतोष
दमसत्यहसरिता॥ अनसूयाआचारधर्ममषवञ्चनमधुरता॥ आस्थिवुद्धिआतमारा
नअनत्यनतितिक्षाः॥ अनालस्पहरिभक्तिसाधुसंगतिजसइच्छाः॥ शरधासमेतकवि
कुलकहिजितिज्ञानगुनगाइयैं॥ ताकौसलीनमनहोइएतहांनढूंढपाइऐ॥ ७१॥ दोहा
निंदाकारिकरिसाधकीजेनरहसतअसाधु॥ वाकौंछूवतपापसिरवाकौचढतुअगाध
७२॥ अशुभाषावलतिपनकौंनपवलंडवषानि॥ डषनकोंवलमारिवोतमासाधुवल
जानि॥ ७३॥ अर्थवहुतछुटवचनकाहिवोञ्जैसीवात॥ अहगाहिरहिवोमौनअतिक
ठिनदुवोएतात॥ ७४॥ लागततीरसरीरमेंतऊछतपुरिजात॥ कुवचनछतक्योंहुनपुरें
दीसतनाहिपिरात॥ ७५॥ जोकोऊवानीकौकहैंकौंरञ्जमितकल्यान॥ सोईवोलेदुर्वचन
होतअनर्थनिदान॥ ७६॥ सोरठा॥ नावकासरधनुतीरकाढेंकटतसरीरते॥ कुवचनधी
रअधीरकाढतनक्यौंहूडरगडे॥ ७७॥ लागतसरमेंज्ञानिकुवचनसरमषतेनिकासि

भा॰वि
२३

पंडित इहजियजानिकवऽतकाढतवचनते ॥ ७४ ॥ चौपई ॥ जापैकोपदेवताकैं ॥ ताकी
बुधिपलहीमेंहरैं ॥ तवपानरकीबुद्धिनसाइ ॥ नवउलटैसवसूझततताहि ॥ ७५ ॥ बु
द्धिभंसतेलहतविनासह ॥ ताहिसुनीतिनीतिसीभासह ॥ सोअववतुमपुत्रनकीबु
द्धि ॥ उलटीभईतुमैंनहिसुद्धि ॥ ८० ॥ पंडुपुतनसौंकरहुविरोध ॥ हेकछुहौंनहार ।
कौसोध ॥ तजहुअनीतिनीतिचितधारौ ॥ अपनेंइउरक्योंनविचारौ ॥ ८१ ॥ छपै ॥ धर्म
पुत्रधर्मज्ञयुधिष्ठिरगुणगणनाइक ॥ नपलसनसपुक्षतिहूपुरसमताल्लाइक ॥ ध
र्मअर्थतत्वज्ञप्रजाकरुखातिपुषदाइक ॥ तेजपुंजवुद्धिवंतभक्ततुममनवचकाइ
क ॥ नपसकलतुलारेसुतनमैं अगुनीयजेअसमैं ॥ प्रभुराजरेउताकौंअवैंकुसल
होइकालवसमै ॥ ८२ ॥ कूरकामकुलकौंहतैं सकुचिदयाजिपवानि ॥ अवलौंसहतक
लेसवहुतुमगौरवउरआनि ॥ ८३ ॥ इतिश्रीमहाभारथेउद्योगपर्वणिविदुरधृतराष्ट्रसं
वादोनामत्रितियोऽध्यायः ॥ ३ ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ चौपई ॥ कहौविदुरमोरैकछूवा
त ॥ धर्मअर्थमिश्रितअवदात ॥ सुनतविचित्रतिहारैवैन ॥ ममसनकौहूलहैं २३

2

नवैंन॥१॥दोहा॥जौंकहुसवप्रानीनकेंहोइहसरिनाभाउ॥सवतीरथअत्रविसेकतेया
तेंअधिकप्रभाउ॥२॥रिजुताराहियेजानिइह१त्रनमेंमहाराज॥लजसहोइइहलोक
मेंअंतस्वर्गसुषसाज॥३॥तोलोंजगमें१रिषकीकीरतिहोतिप्रकास॥तोलौंलुषमेंल
हतुहैस्वर्गलोकमेंवास॥४॥कहोंइतिहासपुरातनऐन॥विरोचनसाथसुधन्वाकेवे
न॥भयोकछुकेसिनीहेतप्रमाद॥सुनेंमिटिजानुहिएकौविषाद॥५॥स्वपंवरमंडिय
टोपतिकांम॥सरूपसनीश्रुतिहीअभिरांम॥नहींकोऊतासमहूसरीवांम॥प्रभानव
जोवनकेसिनिवांम॥६॥दोहा॥अकस्मातआयोतहांविप्रसुधन्वानांम॥राजसुता
आसनदियेपूजाकरिअभिरांम॥७॥इहआसनवैंनहमगयोइतीकहिवात॥निस
वितिइनिजआश्रमहिवहुरिआइहोंप्रात॥८॥आयोसुतप्रह्लादकौतहांविरोचननां
म॥वोलीदानवइंद्रसोंवचनकेसिनीवांम॥९॥दोधकछंद॥कोंनवडेसुविरोचन
हूमैं॥विप्रकेदानवकोकुलभूमैं॥भूपनजोगसिंघासनआहीं॥विप्रसुधन्वकोंपे
वैठतनांही॥विरोचनवाच॥कहाविप्रकहादेवताहमहींहैसवजानि॥हमरेंप

तसव तेवैठे कस्यप के सुत मांनि ॥१२॥ छंद तोमर ॥ अव जानि वीर हवात ॥ द्विज आइ है वह प्रात ॥ मिलि कैं जु होइ विचार ॥ तव जानि ये निरधार ॥१३॥ दोहा ॥ ज्यों तू भाषति भांमिनी त्यों ही ह्वै है प्रात ॥ मिलै सुधन्वा भी द्विज वजानि परै सवै वात ॥१४॥ तोमर छंद ॥ रजनी भई जु वितीत ॥ उगयो सरोरुह मीत ॥ पहुच्यौ सुधन्वा आइ ॥ तहां है सुदानव राय ॥ दोहा ॥ दानव सुत अरु केसिनी विप्र हि आवत देषि ॥ आगै है कै अर्घ दै कियै पूजा करी विसेष ॥१६॥ सुधन्वावाच ॥ नींनो आदर मांनि हम परस्यो न अव मनौं हाथ ॥ विप्र न वैठत असुर सुत इह आसन तुव साथ ॥१७॥ विरोचनवाच ॥ विप्रन कौं आसन कहे अन कांस कुस काठ ॥ नांहि वैठन जोग तुम सिंघासन हम पास ॥१८॥ सुधन्वावाच चौपई ॥ तुम वालक घर ही मैं वैठे ॥ अव लौं कछु विधि नांहीं पैठे ॥ हम वैठत सिंघासन रूपा ॥ पिता तुल्हारे सेवत भूपर ॥१९॥ विरोचनवाच ॥ दोहा ॥ गो हिरन्य गज अरु तुरग हने जे श्री रज दिव्य अपार ॥ विप्र होइ वद कीजियै प्रश्न पूछि निर्धार ॥२०॥ सुधन्वावाच ॥ गज तुरंग अरु कनक कै असुरन कै जु अपार ॥ प्रान होइ है द्विजन कै पूछि करौ निरधा

र॥२०॥विरोचनवाच॥रिवनकोअहनरतनकोनहिहमसोंविस्वास॥प्रानहोइवदिजाइकहहम
पूछैंकहयास॥२१॥सुधन्वावाच॥दैयतपतिप्रहलादहैंपितातिहारेआहि॥मिथ्याकहै
नपुत्रहितकहोंपूछिहैंताहि॥२२॥सोरठा॥दानवसुतअहविप्रपूछनकौंजिपपतु
कियौं॥प्राणहोइवदिछिप्रगपोजहांप्रहलादहो॥२३॥प्रहलादवाच॥दोधकछंद
पंथचलेदोउआएहैजैसें॥संगभयोकवहूनहिऐसें॥भाख्योविरोचनहेंगवऐसें
प्रीतितुमैंइनेंदेषियेकैसें॥दोहा॥हमैंसुधन्वाविप्रसोंनांकछुप्रीतिप्रधान॥पू
छनआएतुमैंपितुहोइवदीहैप्राण॥२५॥आसनपादोदकअरघमधुपर्कादिक
साज॥लाँवोवेगिवनाइकैंविप्रसुधन्वाकाज॥२६॥सदापूजिवेजोगितुम९निआ
एममधाम॥विप्रनलारीभेटइहहेतुगायअभिराम॥२७॥सुधन्वावाच॥आसनजा
लमधुपर्कविधुहमलीनोंसवमांनि॥पूछनआएप्रश्नहमप्राणपैजनिजवानि
२८॥तातेमूठनवोलियेंसांचीकहियेछिप्र॥दोउनमेंअवकोवडोइहतुमसुतहमवि
प्र॥२९॥प्रहलादवाच॥एकेमेरेंपुत्रपहतुमआएप्रश्नधार॥कहाकहोंकोहियेहमैतुम

हीं कौ विचार ॥ ३० ॥ सुधन्वोवाच ॥ कुंडलिया ॥ दीजै पूतहि भूमि अरु जो घर मैं धन होइ ॥ हो
इ हूं नकौं बाट जहां झूंठ न बोलै कोइ ॥ ३१ ॥ झूंठ न बोलै कोइ होइ सांची सो भाषै ॥ जो पं
डित बुधिवंत भलो अपनो अभिलाषै ॥ ३२ ॥ पुत्र हेत हिय हेरि औरकौ औरन कीजै ॥ ज्यों
हे त्यों अनुरेस अंतकौ उत्तर दीजै ॥ ३३ ॥ प्रह्लादउवाच ॥ दो ॥ चारि झूंठ कछु ना कहत जे जा
नत सब बात ॥ कहों विप्र सुत तुमतें कहि गत कोगात ॥ ३४ ॥ सुधन्वोवाच ॥ कवित्त ॥ जैसी ग
ति वीतति दुहागिल तिया कौं राति जैसी गति होति जिय जुवा धन हारते ॥ जैसी गति होति
बहु वैरिनके वस परें जैसी गति होति सिर धारें भार भारते ॥ नगर मैं घिस्यो होइ वाहर कौ
लि त्रगान षेव कौन पावै कछू होत न विचारते ॥ कहै कवि लछमन होति इन हीं कौ ऐसी ग
ति तैसी गति होति जिय जानि मौन धारते ॥ ३५ ॥ छंदपद्धरी ॥ पसु हेत कहैं जे झूंठ बात ॥
फल लहैं पंच जन प्रान घात ॥ गो हेत झूंठ जो कहै जान ॥ अपराध होइ दस प्रान हानि
इह हेत अनंत भाषै निदान ॥ सो लहै सहस पातक प्रमान ॥ भाषत असत्य सो लहै म
हेव ॥ अज्ञात जात अपराध लेत ॥ जग हेत सकल पातक देत ॥ भूमि हित झूंठ बोलै 

नसोत ॥ राजानहियैजोवुद्धिवंत ॥ माहिहेतअनतभाषैनसंत ॥ ३६ ॥ गीतिकाछंद ॥ प्र
ल्हादवाच ॥ मोतेंवडेजियअंगिराजियमैंविरोचनजानिलैं ॥ तोतेंसुधन्वाहैंवडोइहवात
सांचीमानिलैं ॥ तुममांतुप्रसूतीकोंजहांगुरुवीसदाविधिकीनहैं ॥ तातेंतुलारेश्रान
पाअवविप्रकेआधीनहैं ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ जीतिलयौममपुत्रतुमसुनौंसुधन्वागाथ ॥ या
तैंयाकेप्राणअवविप्रतिहारेहाथ ॥ ३९ ॥ सुधन्वावाच ॥ धनिधनिदानवइंद्रहियैंसु
तैंलोभनआयौ ॥ कहीधर्मकीवातजगतमैंअतिजसपायौ ॥ जीतिविरोचनलियौया
प्राणकोंजियपनकीनौं ॥ इहजतुलारीपुत्रववहुरितुमकौंहमदीनौं ॥ अवआयुसपा
कैंदीजियैंइतीवातउरमैंधरैं ॥ चलिजहांहोइवहकुमरितहांममपदप्रक्षालनकरैं
४० ॥ दोहा ॥ चलिआएदोऊजहांसुतीकेसितीवांम ॥ द्विजकेचरनपषारिकैंगयौवि
रोचनधाम ॥ ४१ ॥ विदुरवाच ॥ महाराजप्रहलादकीसुनीनीतिकीरीति ॥ भूहित
अनत्तनवोलियैकरिपुत्रनसौंप्रीति ॥ ४२ ॥ कुलकोंनासनकीजियैलीजैराषि
समाज ॥ हियैदयाधरिदीजियैधर्मपुत्रकोंराज ॥ ४३ ॥ हाथलकरलैदेवतारक्षाक

रतन स्राय ॥ जाकौं राषत देत हैं जीकी बुद्धि बढाय ॥ ४३ ॥ ज्यौं ज्यौं नर शुभ कर्म कौं मनसा
करत समर्थ ॥ त्यौं त्यौं पाके सहज हीं सिद्धि होत सब अर्थ ॥ ४४ ॥ पटै वेद पाषंड हू
चिकपट न छोडै जानि ॥ जम सकट ते ताहि वे श्रुतिन छुडावत आनि ॥ ४५ ॥ अंत समै
श्रुति धूत कौं यौं छोडत है तात ॥ पंख होत ही ज्यौं तुवा ज्यौं पंछी तजि जात ॥ ४६ ॥ मदिरापा
न जु वा काल हु भ्रूणवहु तन सौं वैर ॥ करि वौति यमरूप रिष कौं अंतरु चुगली पैर ॥ ४७
पति पतिनी कौं वाद अरु न पको दोष कुचाल ॥ अन कराहै इतने कहे कात कुलके
नरपाल ॥ ४८ ॥ वेद कुचाली चोर ठग सत्रु मित्र विष्यात ॥ ज्यौं पारीज जिह जन कौ सती
कहै न सात ॥ ४९ ॥ अग्निहोत्र अध्ययन अरु जप मौन ए चारि ॥ होंइ कपट विधि
हीं न तौ लविपरीति विचार ॥ ५० ॥ दुर्मिल छंद ॥ जो पर घर जारै विष दै मारै सोम
वली दल लेइ धनै ॥ परतिय रुचि राषै चुगली भाषै द्रोह मित्र कौ धरै मनै ॥ ५१ ॥
गुरु सेज सिधावै तीरथ नावै सुरापान रुचि चित्त धरै ॥ श्रुतिनिंदा ठानैं कछु न
मानैं देव दरब लै भोग करै ॥ ५२ ॥ जो है कंडा सी बात विनासी नहि जाकौ हितवं

धकाद्यो॥ सरनागतघाती अरुतिउतपाती कृपनहोइधनधांमभद्यो॥ जोसवकछुभषैं
कामनरषैं अतितीस्वांगवहुकोपगहैं॥ एवेदवषानैं सवहीजानैं एवुलग्नसमान
कहे॥ ५२॥ मरहठाछंद॥ कनकजानियें अगिनितपायैं॥ कापरसूरसमरकेलायैं
अरुकुलीनदेषैं आचार॥ भलोबुरोकीयें ब्योहार॥ ५३॥ धीरपरषियेंदारिद्रआयैं॥
विपतिपरैंवैरीअरुमीत॥ एघरकूलबोलतहितलषियें फलपायैंपातकौ१नीत॥ ५४
रोलाछंद॥ हरेवुढापोरूपहरैधीरजकोंआसा॥ हरेअसूयाधर्ममीचप्राननकीनां
सा॥ क्रोधलछिमीहरेकुसेवासीलनसावैं॥ कामलाजकोंहरैंसवेंअभिमानगमा
वैं॥ ५५॥ दोहा॥ ३१जतिश्रीएभकमतिवढतिवृद्धितेसोइ॥ चतुराईतेमूलगाहिसं
पतेदलहोइ॥ ५६॥ कुलकृतसतास्तनदमवुद्धिपराक्रमपाठ॥ वहुतनिवौवहुभा
षिवौतेजवढावतआठ॥ ५७॥ महिमाअभिषेगननकीकरतएकयानआहि॥ नृपज्ञा।
कौआदरकैं सवगुनसोहतताहि॥ ५८॥ जोगध्यानअध्ययनतपदंतकरतम
नलाइ॥ धर्मसत्यरिजतादयासंतहिसेवतआय॥ ५९॥ कुंडलिया॥ सवैवषा

भा०वि० नतधर्मकौंमारगआठप्रकार ॥ तिनकोंपुनीनौंमहींपनुमदैविधिकोब्योहार ॥ द्वैविधि
२१ कौंब्यौपारजागयतपरस्तपुरानह ॥ अरुविद्याअध्ययनउनैंदभीहूठांनह ॥ त्तमा
सकुपसंतोषदयाउरअंतरआनंत ॥ महापुरिषविनहोतिनएयोसवैवषानत ॥ नी
ले छंद ॥ सोहतसोनसभाजहांवृद्धनसोहतहैं ॥ धर्महजोनवषानतवृद्धनसोहत
हैं ॥ धर्मनसौंजहांसत्यवषानतहीकहियैं ॥ सत्यनजौलवलेसजहांछलसौंगहियैं
६१ ॥ दोहा ॥ वहुश्रुतिविद्यासीलवलकुलधनसत्यसरूप ॥ चित्रभाषिवोसूरतात्य
गजोनिंदसभूप ॥ ६२ ॥ पापभोगावतपापकरिजैसेंपापीलोग ॥ पुण्यपुरिषत्यौंपुण्य
करिकरतपुन्यफलभोग ॥ ६४ ॥ पापकिएतेंहोतुहैअसुद्धवुद्धिकोनास ॥ वुद्धिनासते
वहुरिनरपापैकरतप्रकास ॥ ६५ ॥ पुण्यकरमआरंभतेंहोतिवुद्धिकीवृद्धि ॥ वुद्धिवृद्धिते
वहुरिनरलहतपुण्यकीसिद्धि ॥ ६६ ॥ करिकरिपुण्यपुनीतनरपावतपुण्यस्थान ॥
तातेंसेवतपुण्यकोंजेजगमेंसज्ञान ॥ ६७ ॥ गुनदोषनकोंजोधरैंनिश्चलवुद्धिजुहोइ ॥
सोनरसमआचारणतेंकष्टनपावतकोइ ॥ ६८ ॥ पंडितज्ञामैंमतिलहेपंडितकहियेसोइ २१

धर्मग्रंथविधिमैंकुसलसोसुवभोगीहोइ॥६९॥गीतिकाछंद॥जोकाजकीजैद्योसजा
सौंरातिकौंसुषसोइयैं॥जोआठमासहकीजियैचौमासजोमुद्दभोइयै॥जातेजहान
हे हिंइदुषसोतहनिहीमैंकीजियैं॥परलोकतातेहोइसुषकीजैगुजोलगजीजियैं॥७०
पवंगीछंद॥अन्नतुरतपचिजाइसुनीकेंषाइयैं॥पारहोइसंसारसुतहिसराइयैं॥
जोवनचंचलहोइसुजानौंनागरी॥जीतेजुइंद्रीसुभटकीकीरतिआगरी॥७१॥दोहा॥
जोजगअधर्मीदरविसौंछिनछिनटांकतमूढ॥दुराचारतेहोतफिरिरहतनक्योंहूगू
ढ॥७२॥चोपई॥गुरूसवहीकोंसाब्राकहियैं॥दुष्टनकोंसास्तानपलहियैं॥जेनरासु
पूकरतेहैंपाप॥तिनकौंसासताहेजमआप॥७३॥सोरठा॥मुनिश्रुतसरितामित्रमहा
पुरिषकोधर्मकुल॥नारिनकेजचरित्रइनकेओरनदेषिये॥७४॥चोपई॥जोछत्री
दुजपूजाकरैं॥दाताहोइसीलगुनिधरैं॥सालसुभावजातिमेहोइ॥वहुतकालछि
तिपावैसोइ॥७५॥दोहा॥सोलीसोरनफूलमहिदेवहुरतनसमेत॥पंडितसु
रषसासामहीएतीन्योंचुनिलेत॥७६॥करमजुकीजतवुद्धिवल॥तिनकोउत्त

मजानि ॥ किधैंवाकुवलहोतजेमध्यमतिनहवखानि ॥ ६९ ॥ अधमअधिकपराजेतन
अरूवेहेमानमहहेत ॥ तीनि भांतिमहाराजयेयोंकहतकरमउद्दोन ॥ ७० ॥ छपै ॥ ऊ
रजोधनअतिहठिकुमंत्रीसकुनकुमाती ॥ दूसासननिरदईकरनअतिही उतपा
ती ॥ दुष्टचौकरीमिलितिनहकीनेंअग्रेश्वर ॥ तापरचाहतविजयकहोकहाअ
वैमहीधर ॥ सबगुनसमेतनृपपंडुसुतसंतसभासनमानियें ॥ हियपितातुल्य
मानततुमहतिनहपत्रसमजानियें ॥ ७१ ॥ इतिश्रीमहाभारथेउद्योगपर्वनिविदुर
धृतराष्ट्रसंवादेविदुरप्रजागरेचतुर्थोऽध्याय ॥ ४ ॥ विदुरउवाच ॥ दोहा ॥ सुनोंकथा ॥
प्राचीननृपडरकौमिटैविषाद ॥ भयोअसुरचहृतवन्नसोंसाध्यनसंसंवाद ॥ चौपई ॥
हंसरूपविचरततत्वज्ञ ॥ तेजपुंजज्ञानमंडितप्रज्ञ ॥ निरखिउग्रव्रततपअवदात ॥ पू
छतसुनिहिसाध्यसुरबात ॥ साध्यउवाच ॥ साध्यदेवगनहमविष्यात ॥
तुमहिनिरखिमुनिगनअवदात ॥ करिनसकतमनमेंउनमान ॥ सकलवेद
विद्याबुद्धिनिधान ॥ ३ ॥ दोहा ॥ यातेहमसोंकहिकछूकहोकृपाकरिबात ॥ गिराम २८

धरसुं दुरवचन काव्य पुक्ति अवदात ॥४॥ द्विजिउवाच ॥ तोटकछंद ॥ नह चोकरि कैं इ
तनैं करियैं ॥ समता अरु सत्य हिये धरियैं ॥ धरि धीरज धर्म गहै जु वही ॥ उरसैं सुपनैं
पिषु रैसु वही ॥५॥ दोहा ॥ कोहेसु कोऊ दुरवचन कहै सो जु कोऊ धीर ॥ लेहे अकृतन कौं
वहै वाकों दहै सरीर ॥६॥ पवंगाछंद ॥ रूषी अरु अभवात मुषकवहूं न भाषियै ॥ द्रोह मि
त्रसौं कवहुं न मन मैं राषियैं ॥ परनिंदा अपमांन कवहूं ठानियैं ॥ अपनेउर अभिमांन नतु ने
कवहूं आनियै ॥७॥ कवहुं न भूलि नीच की सेवा कीजियैं ॥ शुभ आचार नहि कवहूं
छाडि नदीजियै ॥ मरम अलत अरु कृपाण घोरवानी दहै ॥ जानिय है धरम ज्ञन हीं कवहूं
कहै ॥८॥ दोहा ॥ जे वेधत परमर्म कों कटक वाल कहि षुत्र ॥ महा अशुभ निज वदनते
वांधैं फिरत दरिद्र ॥९॥ चोपई ॥ वचन तीर अति तीक्षण आहि ॥ तिनसौं वैरी वेधत ता
हि ॥ यह जानैं अपने हिय हेतु ॥ अपनौं अकृत मोहि रहे हेतु ॥१०॥ सत असंतत परषी
चोर ॥ पापी अकृती हृदय कठोर ॥ तैसो होइ वसै तह संग ॥ जैसो होत सव नमिलिं
ग ॥११॥ दोधक छंद ॥ जो अति वादु करैं न करावै ॥ काहू के प्रान न तेन हुतावै ॥ घात न क

हूकहूंघातकनाही॥ दुष्वसहतनाहिसहांई॥ १२॥ डंडकछंद॥ कष्टनकाहियैवृथकैं
रहियैएकवातकहियैजुरही॥ कष्टवचनभाषियैंसत्यराषियैंवातहूसरीइहीकही॥ क
ष्टुवातवषानैसत्यहिस्रानैप्रियभाषैतीजीलहियैं॥ प्रियसुडचौरेधर्महधारैंवातइहै
चौथीलहियै॥ १३॥ दोहा॥ जैसीसंगतितैसियैंवसियैतैसेवास॥ जैसोनरचाहेभयोतैसोहो
इप्रकास॥ १४॥ तोटकछंद॥ नरछोडतुहैजितहीतितहीं॥ इहछूटतुहैतितहीतितहीं॥ सव
सोरतेहोतनिर्वत्नइही॥ दुषंरचकहूनलहैतवही॥ १५॥ जवजीतेनजीतिवोचित्तधरैं॥ प्र
तिघातिकुजानितवैहकरैं॥ अवडाईवडाईसमानलषै॥ नहिसोचहियैनहियैहरषै॥ १६॥
दोहा॥ इइनकौनिग्रहकरैसत्यकहैमइहोइ॥ अभसवकौचाहैसदांउत्तिमकहियैसो
इ॥ रोलाछंद॥ अनरथसंकाहोइताहिसहसानविसारैं॥ दैनकहैसोहरताहिमुषसौं
नविसारैं॥ प्रीतिवंतसौंप्रीतिप्रीतिवैरीसौंलहियैं॥ इनलछनसंजुक्तहोइसोमध्य
नकहियैं॥ १७॥ छोटेआपसकैरजावपजगदोषलगावैं॥ जहांतहांउहजाइतहांधि
कारकहावैं॥ विधिसौंमान्योफिरैचैननहिलहैमहीतल॥ ३१८॥ अभाउनतजैकौ

धकरिहोइनसीतल॥ अरुकाहूकोनहिमित्रवहइन लछ्नएकरिज्ञानियें॥ जगकाहू
कौमानैंनकृतसोनरअधवषानियै॥ १९॥ दोहा॥ संकावंतसदारहेचहेनपरकल्यान
करैअनादरमित्रकोताकोंअधमवषानि॥ २०॥ उत्तमहीकोंसेइयैमध्यमसवैप्रमान
अधमनकवहूंसेइयेजोचाहियेकल्यान॥ २१॥ रोलाछंद॥ सोछलसोंवलसोंधनलावे
सोजगमेंधनवंतकहावे। पैनमहाकुलकोपदपावें॥ ताहिनकोउकृतज्ञवतावें॥ २२
सदासराहतदेवतामहाकुलहकरिप्रीति॥ पूछतहूंसोकहिविदुरमहाकुलनकीरी
ति॥ २३॥ सोरठा॥ वेदजज्ञआचाररतपदम९एष्ठविवाहविधि॥ अन्नदाननिरधारमहा
कुलनकेसातगुन॥ २४॥ अभअआचारमहानिधरमकरैअतिमदितमन॥ तिनेमहा
कुलजानितजेअनलकीरतिचहे॥ २५॥ दोहा॥ कवहूंकरैनजगपअग्रहघोटोकरैविवा
ह॥ कुलगिनतिनमेंमछलाहि॥ करैपराभवहजनकोंमगारोकरैकराह॥ २६॥ जो
कोऊसोपैदरविनाहिदेतफिरिनाहि॥ कुलगिनतिनमेंमछलषिलहतसुजसजगमांह
२७॥ कुलजनपसुवसुअश्वऋषिसंपतिवहुतप्रकार॥ कुलसंख्यापावेननसोकहीं

नअनाचार ॥२८॥ परिपूरन आचार कुल जद्यपि धन कछु नांहि ॥ कुल गिनती तिनमैं मुख्य
लहि लहत सुजस जग मांहि ॥२९॥ ताते जेउ उत्तम पुरुष इह चाहत दिनराति ॥ वृत्ति जत
नैसौं राखियै संपति आवत जाति ॥३०॥ संपति करि सो हीन है हीन न गिनिय तताहि ॥ जी
हीनौं आचार तें महा सो जानियै वाहि ॥३१॥ वहवैरी झूठौ छली करै मित्र सौं द्रोह ॥ नृप
मंत्री परदार विहर हम कुल कवहु न होइ ॥३२॥ अति थिर देव अरु पितर ते पहलै भक्षै को
इ ॥ सव भक्षी द्विज दोष कर हम कुल कवहु न होइ ॥३३॥ अति थिर देव अरु पितर तै न पहलै भ
क्षै कोइ ॥ सव भक्षी द्विज दोषकर हम कुल कवहु न होइ ॥३४॥ आदर आसन भै मिष्ट जल
कहिवौ मधुरी वानि ॥ होति संतके सदन मैं कवहु न धन की हानि ॥३५॥ चतुर परम धरमज्ञ जे उ
भ आचार प्रकार ॥ करत मरम सरधा सहित तिनकौ नित सतकार ॥३६॥ भार निवाहत जे वै
लकट त्यौं सत्पुरुष वहैन ॥ मिलि कुलीन वहु भार धह त्यौं त्यौं आरत हैन ॥३७॥ डरियै जाके
कोपते भी न कहियै सोइ ॥ करपत सेवा कीजियै सोऊ मीतु न होइ ॥३८॥ चौपई ॥ हेमृ
ग विपति हरिहि है ॥ आसा स्वाद पिता ज्यौं करै ॥ सोई जग मैं मित्र कहामै ॥ संगति

नामकेऔरसवपामें ॥३८॥ दोहा ॥ जासौं कछू संबंधनहि कीरै मित्रता आइ ॥ वहै मित्र वह
वेधुगति उही हियें ठहराइ ॥३९॥ वृक्षनकौं सेवैनजो धन वित कुल हिनसइ ॥ बाकी
प्रीति तिन होइ थिरता की चंचल हइ ॥४०॥ चौपई ॥ चंचल चित्तबुद्धि करि हीन ॥ होइजु वैरि
नके आधीन ॥ अरथलाहित जिभाजत ऐसैं ॥ हंसतजन तरुकौ सरजैसे ॥४१॥ सोरठा ॥
बिजैजे विनअपराधरी फै विनकारजगुनर ॥ जिनकै सील असाधु सरदकाल के मेघ
जैसौ ॥४२॥ दोहा ॥ जे नर करत न मित्रकौ आदर कृतउपकार ॥ प्रांन अंत हू तिन हपुनि
प्रासतनहि समहार ॥४३॥ एकवेर कछु मांगिकै मीत परषियें मीत ॥ विनजानेकौ जानि
है सज्जननीं तिकुनीति ॥४४॥ सोरठा ॥ रूपबुद्धिवल ज्ञान नास लहत संताप ते ॥ है सं ताप
निदान महाव्याधि अरु व्याधि कौ ॥४५॥ दोहा ॥ कवहू वस्तु अलभ्य कौ सोचन कीजे चि
ते ॥ उपजत ताप सरीरकौं हरषत हियें अमित्र ॥४६॥ कवित्त ॥ कवहूं घटतु इहकवहूं वढतु इ
हकवहूं जनमले तु कवहू मरतु हैं ॥ कवहू कजाचे को इ कवहूकयापै जाचैं कहूं सो चै
कहूं सोचयाही कौ करतु हैं ॥ सपदउपदसंपति औविपति अलाभ लाभ कहै कवि हंसम

यो होहि है दोई करनु हैं ॥ तातें महाधीर रहु जो निकैं ग्य निल्प जियमह रखे न सो चै ग्राय दा ते नि
वैरनु है ॥ सोरठा ॥ इह विकार तजि हा छ पट इंद्री वल हीं नए ॥ बुद्धि प्रवत जे हसा थ में प्रज
ले कृाल सा छिड़ते ॥ धृतराष्ट्र उवाच चौपई ॥ पावक कनक कें तीनु जानहु ॥ हम अनीति ईंधन
उर आनहु ॥ अब कै है इह ज्वलत प्रकास ॥ मम ९ त्रन कौ करहु विनास ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ ७ हि
न कछू नी को लगत चितन लहैं कछु चैंन ॥ सुनत मिटै उद्वेग कछु कहो मला मति बैंन ॥ ४९
विदुर उवाच ॥ तिलक छंद ॥ विनवेद पढें ॥ विन ज्ञान बढें ॥ विन राम भजै ॥ विन लोभ तजै हम
हूं न हियें ॥ तमहूं न कियें ॥ सब कोउ कहै ॥ नहि सांति लहैं ॥ ५० ॥ दोहा ॥ श्रम पहोत हैं बुद्धि
तें तप तें वाढत जोति ॥ ज्ञान होत गुरु सेवतें सांति त्याग तें होति ॥ ५१ ॥ दान पुण्य ग्रा श्रय
तें जे चहत वे फल नाहि ॥ राग द्वेष छाडै फिरत भक्तम दिलमन मां हि ॥ ५२ ॥ भली भांति ।
विद्या पढें भले काम मन होत ॥ भली भांति तप कौं तपत दुष कौ होत उदोत ॥ ५३ ॥ दोध
कछंद ॥ भेद मिटे जिन के उर हैं जु ॥ ओर कछू न दुहात तिन्हें जु ॥ ते हरसे जहू नीं दन आ
वें ॥ रूपवती रमनी न सुहावें ॥ ५४ ॥ मार रहत घने विरहा में ॥ पाठ पुराण सुनैं न सुहा

वै ॥ धर्मकीवातधरैनहिकानैं ॥ रंचकहूनहियैसुषमानैं ॥ ५५ ॥ नीतिकीवातकछून
सुहाई ॥ पावतहैं कितहूनवडाई ॥ भोजनस्वादकुस्वादतो लागै ॥ भेदमिदेसमतानहिया
गै ॥ ५६ ॥ लाभहूतेहरषैनहियैजू ॥ सांतिनहोतिकितेकक्रियैजू ॥ जीवकहूंठहरातना है
ठैरैं ॥ एकविनासहीकौंमनदौरैं ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ महाराजजिनकेहियैमैंरमियौंआइ ॥
केवलएकविनासविनतिनैंनऔरसुहाइ ॥ ५८ ॥ छंद ॥ गारकौहदधकितेककहैकोऊ
सांचसुमानियैं ॥ विप्रजितौतपतेजनदेसुप्रमानवषानियैं ॥ चंचलताततनीनमैंहो
तिजितीउरआनियैं ॥ जातिविरोधतेजोकछुहोइसोरूंवनमानियै ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ परसत
वहुएकत्रकैंमूलपसूचकतंत्र ॥ एचौपैचकतीसहतज्यौंहीजगमैंसंत ॥ ६० ॥ सोरठा
होतसरूसामंतगायविप्रअरुतियनपर ॥ नैनरतुरतप्रतंज्योंतरवरतेपक्वफल ॥ ६१ ॥
दोहा ॥ एकवृत्तहअतिहिवडौजदपिअतिवलवंत ॥ तेघपपवनप्रचंडवलतुरतसं
मूलनपरंत ॥ ६२ ॥ मूलपवृहएकत्रवहुरहतपरस्परसंग ॥ पवनवेगपरचंडवकृति
नहवरतनहिभंग ॥ ६३ ॥ कुंडलिया ॥ भूमैमिलैनजातिसौंरहैमूकेलौजाय ॥ एकपु

रुषकौं पाइ ज्यौं वैरी लैत रवाय ॥ वैरी लेत रवाय जदपि वहु गुन नर होई ॥ तदपि कष्ट क
छु परै संग लागे नहि कोई ॥ मिल्यो जाति सों रहै सकै वरिन की धूमैं ॥ ज्यौं सरवर मैं कमल
वढत पै सरवर भूमैं ॥ ६५ ॥ इनकौं घातन की जियें रीन विप्र अरु गाइ ॥ वालक वंधव कामि
नी सरन रहै जो आइ ॥ सरन रहै जो आइ सरन जाकौ पुनि राहियें ॥ राजा गुरु अरु जाति करै
सु यसो ई सहियैं ॥ सहियै आइस सी सु अन्न जिनकौं नित दैयें जिनकौं ॥ अपनी पार वसाइ
भलौ करियै कछु इनकौ ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ याते अधिकन औरगन मानस मैं महाराज ॥ मिलि
रहिनौं जाति मैं तिन लहियै वुधसाज ॥ ६७ ॥ रोग होइ चिंता कियें जानत सुकुल सु
जान ॥ सदां निरोगे तुम रहौं रोगी मृतक समानि ॥ ६८ ॥ छप्पै ॥ जिनके उर कछु रोग तिनैं स
मरु चैन गात्र ॥ जिनकै उर कछु रोग तल्व कौ करैं न आहार ॥ जिनकैं उर कछु रोग भोग
तिनकैं न हि धन कौ ॥ सदां रहै अप्रलित दीन दुखित रोगी तिन मन कौ ॥ सव रोग मिटैं या
के ज भात अमरस जत सज गनं डियै ॥ नृप पंडु पुत्र निज सुतन मैं हियैं विचलो छांडियै ॥ ६९ ॥
दोहा ॥ कडु कडस्म तीक्षण अस रुखो रुधा वंत मीस ॥ ऐको कोप्य हपान करि सीत लहे तम

हाम ॥ ९१ ॥ याजगमैंयारोगकोएकैअ्रोषधअ्राहि ॥ संतपियतयाकोंतो कौंपियतअ्रसंत
नयाहि ॥ ९२ ॥ कुंडलिया ॥ तवहीमैंतुमसोंकहीतुमनसुनीचितआंनि ॥ जीतिलईजववं्
पतीजुवाकपटकोठांनि ॥ जुवाकपटकोठानि मानितवहींकिनिलीनीं ॥ वरज्योकाहूनपू
तपूतजवअ्रैसेंकीनी ॥ कीनीवहुतअ्रनीतिजदिपसमझायोतवही ॥ अ्रवक्योमनपछि
तातनातसमझैकिनतवही ॥ दोहा ॥ धरमअ्रलपहूसेइयेंसूक्षमगतिउरआनि ॥ निरवलपें
वलसाजियोंसोवलअ्रलपवषानि ॥ ९४ ॥ कूरकरमतेहोतधनकुलीविनासेलाल ॥ सुधर
मसोंधनजोरियेंसोनिवहेवहुकाल ॥ ९५ ॥ कौरवपंडवमिलिसुअ्रधिकहितकेमतवालहू ॥ वे
पालेतुमसुतनउनहतुमसुतप्रतिपालहू ॥ तुमकेउनकेसत्रुमित्रएकैकरिजानहु ॥ सुवसप
तिवहुलहेंहोमोहमहिमैंवहुमानहु ॥ महाराजकरौमनअ्रछकरिजेजसजगतवषांनियत ॥ न
पअ्राजमीढकुलवंसमैंअ्राजमींढतुममानियत ॥ ९६ ॥ अवसुततुममैंपंडुसुतअ्रज्ञाकारी ॥ आधीन
वनवमिलिहेंकलेसकोंतिनकोंरषवारी ॥ संधिकरौमहाराजजगतमैंनिजजसमंडहु ॥
अंतरवाहतसत्रुमनोरथतिनकेषंडहु ॥ निजवचनवधवेसत्यवचउरजोधनसमझाइयें

भ०वि०
३३

मिलिएकहोतहरौबैंसजनउहूंलोकसुषपाइयै॥११॥इतिश्रीभारथेउद्योगपर्वनिविदु
रधृतराष्ट्रसंवादेविदुरप्रजागरेनामपंचमोऽध्याय॥५॥विदुरवाच॥दोहा॥स्वायं
भूमुनिकौंवचनसुतिनपगुनश्रवदात॥एसचहम्राकासकोकरतमुष्टिसौंघात॥१
हाथनसोंपैंचनकहतपकरिपुरंदरचांपु॥रविकरदावतचरनतरमतुनजानतआपु
२॥रोलाछंद॥तोषतमूरषनरहआसिसुहिदेतजुसिष्या॥करतसत्रुकीसेवआपन
परमागतभिष्या॥पुरिषपुंजमेंतियेराषिमनमेंमुदमानत॥भयोविगारनकाजवडाई
अपनीठांनत॥३॥जेनरसरधाहीनतिनेकछुधरमसुनावत॥करतवलीसोंवैरुआपु
वलहीनकहावत॥तियसमूहमेंराषतहियेभयरंचनआनौ॥जगमेंचाहतमानइतो ते
मनअगपवषानत॥४॥अनजाचनजोहोइताहिजाचतनहिलाजत॥पुत्रवधूसौंहे
सतवातजुवतीसौंसाजत॥अनकारनौंक्रतकरतवीजपरषेतहुडारत॥भयोकहूंक
धुलाभताहिकवहूंनसभारत॥५॥मषतेभाषतेहैंनसोरकहिजगहसुनावत॥ज्ञान
तपरमअसतजायताकोंसिरनावत॥एसचहमहाराजपुरिषतिहुलोकभयकार ३३

पासबांधिलेजाततनरककरनकोजमकिंकर॥६॥दोहा॥जोबरतैतनहिरीतितासोंत्यौंहीबर
तियै॥मुद्रसाधसोंप्रीतिकपटीसोंकीजेकपट॥७॥धृतराष्ट्रउवाच॥तुनियतवेदनमांहिश्रा
पपुरसकीसौबरस॥पूरनभुगतहिनांहिकहोविदुरकारनकहा॥८॥विदुरउवाचचौपई॥त्या ४
गनकोंवादबहुवानह॥अतिसंसयअतिक्रोधमनानह॥मित्रद्रोहअतिआलसजान
हु॥एषटआपुविनासकमानहु॥९॥दोहा॥ईछहपापुरुषकेकरतआपुकोसाष॥नाह
कपासंसारमैंमीचबलगावतदोष॥१०॥सवैया॥घातुकरैसरनागतकौद्विजवित्तहरैकोरै
वाहणीपानै॥नीचकोआपुसमीसधुरैगृहसेजरमैरतिदासीसोंमानै॥विपुहसंकटमें
पठैविसवासहनैछलमीतसोंठानै॥पातकतेमनमैंनडरैरतनेद्विजपातकवेदवषा
नै॥११॥दोहा॥एद्विजघातकतुल्यनरवेदप्रकारतनित्त॥इनसोंसंगतिहोइतोकीजै।
प्रायश्चित॥१२॥मल्लिकाछंद॥नीतिरीतिमैंसुजान॥अल्लिबुद्धिदत्तदान॥सांतिसंग
हेप्रवीन॥जेरहैंसदांअदीन॥१३॥अर्थजेकरैंअनेक॥जेहियेंधरैंविवेक॥जेमहोसी
लहैहलजु॥जेमहदुखभावप्रज्ञः॥१४॥मानिलेतबातबात॥जगपसेसअन्नजात

जेकरैंनजीवघात॥तेसदेहस्वर्गजात॥१५॥दोहा॥दुर्लभपुरिखसंसारमैंकहैंनुहातीवात
उर्लभअप्रियपथ्यवचवक्ताश्रोतातात॥१६॥सोरठा॥परमधरमहैसोपागिपथ्यकहेअ
प्रियवचन॥पुभअप्रियसोपागिनृपकोवडेसुहाउते॥१७॥मुरलीछंद॥एकपुरषत
जियेकुलअर्थे॥ग्रामहेतकुलतजेसमर्थे॥ग्रामनगरकाजैंतजिदेत॥पृथ्वीतजत
आत्माहेत॥१८॥धनराखियेआतमाकाज॥धनसौंअवनिराखियेराज॥देधनअरुदा
राअवदात॥आतमराखिलीजियेतात॥१९॥सोरठा॥जुनीपुरानीवातजुवाकलहकों
मूलहैं॥हांसीहूमैंतातनातजुवानखेलिये॥२०॥सुंदरीछंद॥बलिजुवामहद्रोपतिअ गकेसमभा
नीलनमैंतुमसोंकरजोरिकरीविनतीसुनमानी॥दीरघरोगतज्योसदअवधनीकी॥
जानी॥ज्योंमहाराजतुमैंनतचीवहुहितकीदीनी॥कागनहाथनमोरनकौंवहचाहत
जीत्यो॥सिंघनकोंतजिसूरनकोंअतिरापतप्रीतो॥पापसमोंअपनोंउरसोचुघनों
भरिहेज्यू॥होतवहेरसुहोइहीहोइकहाकरिहेज्यू॥सोरठा॥क्रोधभावउरआनिसे
वकासोंकाचहुननकत॥ताहिपितासमजानिभलपनजगतविपतिहू॥२३॥दोहा॥ ३४

लैसेवककौजीवकाग्रौरहितवदाय॥ सोसेवकेसेबैतऊविपतिपरैतजिजाइ॥२४॥
दोधकछंद॥ कीवैसहोइसकाजविचारैं॥ लागतिलाभतहींडरधारैं॥ जोइहलोकवि
जैग्रनिलावैं॥ जीवकादेषिसलहइकरावै॥२५॥ कुंडलिय॥ जानैग्रपनेस्वामिकौडरग्रं
तरकीवात॥ सनमौनिरषिकारजकरैंग्रालसकौतजितात॥ग्रालसकौतजिताततवात
हितकीग्रविलावै॥ कुलकोउत्तमहोइपायौहितसौंमनलावै॥ राषैग्रपनीसक्तिबु
द्धिवलग्ररिहिनिधानै॥ ग्रेसौसेवकताहिभूपग्रानंनसमजानैं॥२६॥ ग्रानैग्रपती
वुद्धिकोमननैंवडोगुमान॥ त्यावदेइजोतुरतही ग्रायसकुनैंनकान॥ ग्रायसकुनै
नकानरहैयाहीसौंग्रकस्यौ॥ कुलकौहोइनिकष्टसरोंतुररसेंसपकैस्यौ॥ वचनक
हइप्रतिकूलहियैडरहीउरग्रानैं॥ सेवकदीजैतुरतत्यागिजोकह्यौनमानैं॥२७॥ चौपई
सरलसुभायसचिकनहोइ॥ ताकहुवसकरिसकैनकोइ॥ कायरपनजियमैंनहिधरैं॥ प
तिसंदेसकहतनहिडरैं॥२८॥ दयावतग्ररुवचनउदार॥ ग्रालसरोगरहतग्रविकार
कोवहुगहैनदीरघसूत॥ इतनेगुनजानैसोदूत॥ पवंगमछंद॥ प्रीतिरीतिकवहुन

भ॰वि॰
३५

सुरिकेघर जाइयैं॥ विनासमैं वाहन चढि कबहुन धाइयैं॥ तरुनी कोविसवास न मन
मैं राखियैं॥ गावरकी तिय कबहुन जिय अविलाषियैं॥ ३०॥ कछु सकोच डर आनि जे नरका
हू लेडरत॥ सो नरकबहुन आनि राति नैं बैठे वो हटे॥ ३१॥ दोहा॥ गृह मैं त्र को ऊ करै तहां
त जे पै जानि॥ कबहुन कीजै नीच सों गृह मैं अहित मानि॥ ३२॥ सोरठा॥ जाचै को ऊ आय
सहसा नाहिन कीजियैं॥ कछु मिस कारन लाइ नांही कीजै जतन सों॥ ३३॥ कुंडलिया॥ इ
ने सों भूलि न कीजियै सपनैं हूं ब्योहार॥ देषत लागै घिना मनों धूत विदित संसार॥ धूत
विदित संसार नारि विभचारिनि जाकें॥ तस्करी विधवा होइ पूत वालक है ताकें॥ राजा
भ्राता पूत प्रीति भूपति की जिनसों॥ सदां कटक मैं रहै डरत रहियै तिन तिनसों॥ ३४॥ दो
हा॥ रूप तेज बलवान वर श्रीषु विपर सडे सन॥ तिय पराइ कमारतार मन कियै
दूस हो न॥ ३५॥ सोरठा॥ संचित अमल उदास नवल अगापाता अउ गुण॥ लखु आहा
रै होत बहु भली को उनकहे॥ ३६॥ कुंडलिया॥ दीजै कबहुन जीव कौं इनकौं भेद बता
इ छली निरदई नठ निठुर बहुत अन्न नैनो षाइ॥ बहुत अन्न जो षाइ रस दा अक ३५

रमनहिंछंडैं॥ ऐसकालनहिलखैं भेषअरु भावनमंडैं॥ कोरेउ अरु न चितकर्मताहि दे
घतन छीजैं॥ प्रेमकेकोविलासभवनमैं कबहुनकीजै॥३१॥ मानैं जोअरु नमान्यकौं कौरे
सुखबसौ थैंह॥ ताकीजगनि दाकरैं कबहुतजैनहिंवैह॥ कबहूं तजैनवैरु झूपा कबहु
नअरु आनैं॥ कहुतजहुनैंन धर्मसदांपरनिंदा ठानैं॥ बनवसोसठनिठुर धूतमीतहअरु।
रिआनैं॥ इनहिनजाचैजानिकैलोजोमेरोमानै॥३८॥ दोहा॥ मलिनकरमनितकरैं रैंन
दांफगरोहीठानैं॥ बहुतजवालेमैंरुभगतिकबहुनडरआनैं॥३९॥ करैनीचसोनेहचतु
रअरुपहीकौंमानैं॥ इनकीतजिपैसेवरतेनरअधमवषानै॥४०॥ रोला॥ होतिसहाइ
नेअर्थविनविनसहाइनहिअर्थ॥ एदोऊवंधनपरस्परभाषतबुद्धिसमर्थ॥४१॥
प्रथमकरैरउचनअरिन रैइस वृत्तिवतार॥ सुताउ थानविवाहिकरिआपवसेवन
जाइ॥ सोसवकौनीकौलुगैजातेजियसुषहोइ॥ अर्थधर्मकोमूलइहकारजकरिऐ
वे सोइ॥४२॥ उत्तमवुद्धिप्रभावल [illegible] तेजसत्यविवसाय॥ छगुनजहांआपदमयतहांन
व्यापतआइ॥४३॥ कुंडलिया॥ पंडुसुतननसौंवैरकरिसुरपतिडरपतचित्त॥ देषोदोष

प्रतत्तवकुहरबहोतग्रनमित्र॥ हरबहोतग्रनमित्र जगतमैंसु जसतनसावत। बसत॥
सुरांउदविमनवैंनतुवसुवननपावत॥ तातेविनतीमानिज्ञातिहितग्रपनेमनसों॥
सध्यकरोमहाराज ह्रपाकरोपंडुसुतनसों॥ ४४॥ तोमरछंद॥ रिसहोतभीषमद्रोन॥ तव
धीरधारहकौंन॥ तवहोततुमपरकोप॥ तवहोतलोकविलोप॥ ४५॥ रिसयोयुधिष्टि
रभूप॥ जेन्ग्घोरग्रतकरूप॥ इमिलोकभेडतपात॥ जिमिहोततेंग्रहपात॥ ४६॥ छपै
॥
वनविनसैंविनवाघवाघविनसैंविनकानन॥ वनराषेमृगराजवनहराषेपंचानन
तुनसमानतुमउग्रसत्तपंचपंडुनंदनप्रवल॥ मिलिउदधिग्रंत्तपालउग्रवनिलहो
मोदमगालसकल॥ ४७॥ दोहा॥ त्यासुभगुनलषिग्रौरकेउपरकरतसराह॥ ग्रौगुन
निरषतजगतकेत्योपापीकारचाह॥ ४८॥ ग्रर्थ धर्म चाहेंजुनरसेवेधर्मसमर्थ॥ ज्योंग्र
मतपुरलोकविनत्योनधर्मविनग्रर्थ॥ ४९॥ जाकीमतिकल्यानहितपापहिदेख
हाइ॥ तिनकारनकारजसवैंजानोंभलेवनाइ॥ ५०॥ भलीभांतिसेवतजुनरधर्म

मूर्थ अरु काम ॥ इहूं लोक तिनकौं मिलत ए तीन्यो अभिरांम ॥ ५१ ॥ क्रोध हर्ष के वेग ।
कौं जे थांभत निज चित्त ॥ मोहन लहत विपत्ति मैं जहां वसत ति श्री नित्त ॥ ५२ ॥ शेलछंद ॥
प्रथम बाहुबल कह्यौ द्वितिय मंत्रीबल जानौं ॥ तीजे धन बल वडौ वेस चौथौ बल मांनौं ॥ सकल बलन कौ सार पंचमौं कह्यौ बुद्धि बल ॥ तिन बल तुम आधीन रहत ए सक
ल भूप बल ॥ ५३ ॥ चौपई ॥ जो करि सकै बडौ उपकार ॥ जाके कोप वधै विकार ॥ ता सौं वैर
होइ सो भूर ॥ इहन भूलियै है वह दूर ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ राजा रानी अग्नि निगुह सर्प सत्रु नृप भो
ग ॥ आपुध कौ विस्वास जिय करत न पंडित लोग ॥ ५५ ॥ बुद्धिवान सौं । जो इन्यौं कौं मव
चावै ताहि ॥ मंत्र जंत्र औषधि जतन कछू न लागत जाहि ॥ ५६ ॥ वडे वंस जनम्यौ जु नर
पावक विष भुजंग ॥ एक वहुन अपमानियैं अमित तेज ए संग ॥ ५७ ॥ दोधकछंद ॥ काठ
मैं पावक गूढ रहै जू ॥ ताकौ प्रभाव न कौउ लहै जू ॥ जौ लग औरज गावै न कोऊ ॥ तौ ल
ग काठ हदाहै न सोऊ ॥ ५८ ॥ जाकहु जो मथि कोऊ निकारै ॥ काठ समेत सवै वन जारै ॥
काठ मैं पावक ज्यौं उर आनौं ॥ त्यौं प्रभु पंडु के पुत्रन जानौं ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ इतनन हित प्र

भुजमल्लनापंडु पुत्र दम रूप ॥ विना हेत के आस रैं ललनान वादति भूप ॥ ६० ॥ इति
श्रीमहाभारथे उद्योगपर्वनि विदुर धृतराष्ट्र संवादे विदुर प्रजागरे नाम षष्टोऽध्याय ॥ ६ ॥
विदुर उवाच ॥ चौपई ॥ आवत वृद्ध तरुनिके भौंन ॥ प्रानकरत ऊरध कौं गौंन ॥ लेत प्रान प्रति
आगें धाय ॥ वहुरौं प्राणवसत घट आय ॥ १ ॥ अभ्यागत कौं आसन दीजें ॥ वहुरि पाद प्रक्षा
लन कीजें ॥ कुसल प्रश्न करि कहि मैं वात ॥ पुनि दीजे कछु भोजन तात ॥ २ ॥ चौपई ॥ जाकौं
आसन अन्न जल अभ्यागत न हि लेत ॥ ताकौ जीमन जगत में अति अनर्थ कौ हेत ॥ ३ ॥
वंधु वाल घाती मित्र चोर ॥ वृष ल चरपति डिग्यो कठोर ॥ स्त्रिया कूर सुरा जो पीवें ॥ सिक
रा वीज रापि जो जीवें ॥ वेद मंत्र जो विक्रय करैं ॥ पाप कारत जिय मैं न हि डरैं ॥ इनमें अति
प्यारौ हू होइ ॥ दासन जोग अतिथि न न हि सोइ ॥ ५ ॥ सोरठ ॥ पक्व अन्न गृह मांस नौंन तेल द
धि दूध घृत ॥ रातो वस्त्र सुवास साक सहत फल मूल तिल ॥ ६ ॥ विक्रय क वकुन कीजि
ये इन वस्तुन कौ तात ॥ ते इनकौ विक्रय करत महानरक कौं जात ॥ ७ ॥ सुनि महिमा मा
टीकन का प्रिय अप्रिय समजात ॥ लोकसंधि विग्रह विगत मुनि रिस हीं न उदास ॥ ८ ॥ ३१

साकमूलतनधांनफलभषिकै रेवनवास ॥ इद्रिनकौ संजमकरैं जगसौं रहैउदास
सावधानसेवैअतिथि अगिनिहोत्र रति होइ ॥ १५ वधुरैधरसकु मन तप साकहियै सोइ
हरिजानिनहिमूलियैं बुधिवंतनकौं पाइ ॥ दीरघवुद्धि भजानवल नवतव हमिहैं आइ ॥
ताकौं मननपत्याइजि नि ताकौं करैविखास ॥ होतसुभयविखासतेकरतसमूलविना
स ॥ १२ ॥ तजेंईरषा प्रियकहैं रोषरवनि अलछि ॥ वांटिषायवोलैमधुरहोइसरलउ
रस्वच्छ ॥ १३ ॥ हो इनकवहूं पवतिवसकैहितसनीवात ॥ पूजनीय मैसेपुरसजगमैंउ
भैतात ॥ १४ ॥ कुंडलिया ॥ गृहस्तिपतिव्रततस्त्री सुषदपुत्रअभिराम ॥ ज्ञानिभागि
निधि जगतसोंग्रप्राप्रियैवाम ॥ ग्रप्रापियैवांम धामधनवाकहुदीजैं ॥ ब्यंजनरचै
वनायजायकरिभोजनकीजैं ॥ भल्यकरैव्यापाररीतिक्यौंकहीवेदपति दितिउजसे
वाकरैतवहिलषियेगृहदीपति ॥ १५ ॥ दोहा ॥ आपतुल्यजिपजानियैंताहिसौंपियैं
ताय ॥ षेतीजवहीहोइतव आपुरषियैजाय ॥ १६ ॥ चुपई छंद ॥ पावकजलतैलोहउ
पलतैं छजतेछत्रीउपजततात ॥ इनकौतेजदसहसवहीकौं होतनहीतेतहीसमात ॥

भा॰वि॰
३१

सोरठा॥ उपजत सत कुल आय समावेत अति संत न र॥ आपोर है छिपाइ जैसे पावक काठ मैं॥ दोहा॥ अंतरंग ऊपर के लोइ॥ जा कौं मंत्र न जानैं कोइ॥ जा कौं दुषि चहूं दिस होइ॥ १९॥ सोरठा॥ कियो जु चहिये राज मष ते कबहुं न भाषिये॥ धर्म अर्थ कौ काज प्रगट भयो ई देषिये॥ २०॥ चौपई॥ मंत्र भेद कबहूं न हि दीजै॥ अति एकां त ठौर लषि लीजै॥ निरजन वन गिरि सिषिर निहोइ॥ मंदिर जहां निकट नहि कोइ॥ दोहा॥ मूरष मीत अमित्र पुनि पंडित चंचल चित्त॥ इन सौं कबहुं न मंत्र कौं भेद भाषियें मित्त॥ २१॥ मंत्री कबहुं न कीजियो बिन परषें नरनाह॥ मंत्र गुप्त विधि ज्यों मिलि तें प्रोर अर्थ की चाह॥ २२॥ जो महीप के पार बद्दल है भयो ई काज॥ धर्म अर्थ अरु काम विधि निपुन पुन पंसिरताज॥ २३॥ चौपई॥ मूढ मंत्र जा कौं नितरहै॥ सो न पंसिद्धि सर्व द्दा लहै॥ अप्रमत्त जे करिये कर्म॥ तिन के की ये होत अधर्म॥ २४॥ तिन कों करे प्रमाद डर आनि॥ लहे सजीवन हूं की हानि॥ उचित सुकर्म कियें सुष होइ॥ अन कीपें पछितै है सोइ॥ २५॥ दोहा॥ मंत्र न जाइ सुनाइये होइ जु षट्ठ गुन हीन॥ वेद पढे बिन विप्र कौं न। ३८

हिसाधीमैंलीन ॥ इतभाव स्राभ्र यकलह श्रीसननसंधप्रमान ॥ राजनीतिमतएकहै
परगुनजांनहुजांन ॥ २७ ॥ थानवृद्धिक्षयज्ञानजुत जोजानैंनरनांथ ॥ क्रोधहर्षहोइन
विफलकोसहोइजहहाथ ॥ २८ ॥ जाकेसीलप्रभायकोभेदनलषवतकोइ ॥ कियोचहैसो
ईकरैंतावसमैंसवहोइ ॥ ३० ॥ कुंडलिया ॥ पुनैंनामहीकेहियैंमोदमानैं ॥ लषैसतु
संतोषभूपलस्रानैं ॥ धनैंवादिजेमत्यवढावैं ॥ अकेलोनसवंरहरीकहावैं ॥ ३१ ॥ दोहा
विप्रहजानैंविप्रगति पतिजानैंतिहरूप ॥ मंत्रीगुनजानैनपति भएहिजानैंभूप ॥ ३२ ॥
कुंडलिया ॥ आवैजोअरिदावमैं नहछेवहनिपताहि ॥ दपानउरमैंकोजियेफिरिखैवलवढिजाइ
भूरिवहुरवलवढिजायकहोयौंसोकोकीजै ॥ कोरनमडहेसवताहिक्योहूनपतीजे ॥ कवहूंजो
नेसिजायवेगिहिभयउपजावै ॥ कवहुनदीजेछाडिदावमैंवैरीआवै ॥ दोहा ॥ द्वैविप्रा
मोसवलरोगीवूढोवाल ॥ नगरहकीजेक्रोधकोइनसोंलदानपाल ॥ ३३ ॥ मेनकरत
कवहूंकलह अल्पप्रयोजनअर्थ ॥ तिनकीकीरतिजगवदतिरंचनलहतअनर्थ
२४ ॥ सोरठा ॥ सदाविफलहैजाइजाकोकोपवसन्नता ॥ भत्यनचाहतताहित्यों

भा०वि० भोजापतिकौंतिया ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ बुद्धिवानहोतनधनिकमूरिषधनीनहो ॥ जानत ।
३९ लोकाचार बुधमूढनजानतकोइ ॥ ३६ ॥ बुद्धिबूझिवपढिजिम्रतविद्याबुद्धिजान
इवयहबुद्धिइनकौकरतेमूढनकोअपमान ॥ ३७ ॥ वचनदुष्टनरकुवनलेअधरमर
तेनरकोइ ॥ मूढकृतघ्नीकोपकरिलहेप्रनर्थहलोइ ॥ ३८ ॥ समौनचूकेनयचले
दानजथाविधिदेइ ॥ भलीवातमुषतेकहैसवैवसकरिलेइ ॥ ३९ ॥ नम्रचतुरमति
मानतनरसरसतज्ञजोकोइ ॥ लहैवडाईजगतमैंतदपिनिरधनहोइ ॥ ४१ ॥ समदम
करुणामृदुवचनधृतिपविद्यनाताता ॥ द्रोहनकरिवौमित्रसौंलखवदावृतसात ॥ ४२
सोरठा ॥ वादिनषायकठोरलज्जाहीनकृतघ्ननर ॥ दुष्टअतमाचोरइनकौंसंगन ।
कीजियै ॥ ४३ ॥ कोपावतविवकानप्रापसदोषरुदोषकरु ॥ सुषसोवतनहिराजजो
भजैगनिरषैभुवन ॥ ४४ ॥ चौपई ॥ जाहिकोपहोतजानि ॥ होइजोगछैमहान ॥ देवतासमा
नचाहि ॥ राषियेप्रसन्नताहि ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ पापीकेडनमन्त्रैकेंपुत्रमूरिषकेपानि ॥ का
रजतियआधीनजेतेसवसंसयजानि ॥ ४६ ॥ सोरठा ॥ वालराजतियराजजहछत्रहोइ ३९

गुवाअधिक ॥ तहांसवसहितसमाज बूडतपाहनज्यौं सलिल ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ अटकतजे
न विसैसैसौंलितप्रयोजन चाहि ॥ पंडिततेई जानियें औरप्र संगीग्राहि ॥ ४७ ॥ दोधक
छंद ॥ ४८ ॥ जाहिसराहततेसव ज्वारी ॥ ताहिसराहतिचंवलनारी ॥ जाहिसराहतभाट
वृथांही ॥ जानहुसोनरजीवतनांही ॥ ४९ ॥ दोहा ॥ छाडिधनुर्धरपंडुसुत तिनमेंते जगव
पार ॥ तुमसौंप्योंऐश्वर्यकौ दुर्योधनसिरभार ॥ ५० ॥ भूषदेखिहौवेगिहीनिजसंपत्ति
अवनीस ॥ भ्रष्टभयोंऐश्वर्यसव ज्यौंवलिदानवईस ॥ ५१ ॥ इति श्रीमहाभारथेउद्दे
गपर्वणिधृतराष्ट्रविदुरसंवादेविदुरप्रजागरोनामसप्तमोऽध्याय ॥ ७ ॥ धृतराष्ट्रउवाच
दोहा ॥ कारनसंपतिविपतिकेकरमनरनकेहाथ ॥ जैसेंमूरतिकाठकीलहेचलैकर
साथ ॥ १ ॥ विधिकोप्रेरयोपुरस २ हम्अवसकरतसववात ॥ सुनिवेकोअभिलाषहैऔर
कहौकछुवात ॥ २ ॥ विदुरउवाच ॥ वचनहुहस्पतिहुकहेविनासमेंनरनाह ॥ लहैंअव
रोवुद्धिकीकोउनकरैसराह ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ मीतहोतवहुआइधनदेमीठीवातकाहि ॥
जेहितमंत्रउपाइमिलैमीततेईसही ॥ ४ ॥ साधुसुधीपंडितचतुरहेगुनवहुअव ।

भा॰ वि॰ गुनसुबदात ॥ जासौं रंच कदे घडर जाकौ कछु न हहात ॥ ५ ॥ दोहा ॥ जासौं हियैं विकार
४० भले करम वाके बुरे ॥ जासौं हैं डर प्यार बुरे करम ताके भले ॥ कुंडलिया ॥ विनती प्रभु नम
सौं कही मैं तव हित पग लागि ॥ दुरजोधन जा दिन भयौ या हि देहु तुम त्यागि ॥ याहि देहु तु
म त्यागि पुत्र सब वस तसौं राषहु ॥ सत सु पर्कै हु नास या हि राषत अभिलाषौं ॥ अल पल
भव कुल न लाभ हीनां हि न गिनती ॥ बुद्धि होति छय रूप कहु सुनियै प्रभु विनती ॥ ७ ॥ सो
रठा ॥ धन करि कितै समुद्र गुन करि कितै समुद्र नर ॥ गुन विहीन धन रुद्र तजियै नि
त्य प्रसिद्ध रह ॥ ८ ॥ सोरठा ॥ जानत हो जिय तात तहां धरम जय है तहां ॥ सुत हित अस स
कुल तिक है कहा कीजे विदुर ॥ ९ ॥ दोहा ॥ कहत ज्ञ क्कासस तवचन हों न हरस बवा
त ॥ दुरजोधन को त्यागि वो सहित न सकत दुष गात ॥ १० ॥ विदुर उवाच ॥ नीति निपुन
मति नम सरव गुन सहित नपाल ॥ सूक्ष्म हू में दृष्ट निरषि सह हि सकत तह का
ल ॥ भुजंगीछंद ॥ पराई बुराई सतें जे बषानै ॥ पराये भला ई भये मोद मानैं ॥ जहां श्री
तिक्की रीति कौं देषिया में ॥ करें जतन ऐसौ विरोधै वदामें ॥ १२ ॥ महादोष आरित्ल ४०

अ्र

षैजाहिदेषै ॥ वैसेसंगजाकैंवडेभै ले षै ॥ अप्रसंतेषद्दतीमहाविषुमागैं ॥ दियेदृव्यजाकौं
हिपैदैषलागैं ॥ १३ ॥ तजेलाजकोमीछलीमूंछभाषै ॥ सदांचितमैंभेदकीकीवाततनाषै
पी सवैजाहिविष्यातयोंवषानै ॥ तजैसंगअैसेसनकौजेसपानैं ॥ दोहा ॥ महादोषअप्रसुतएक
हस्त्रत्तजुतिनकेसंग ॥ अैसेपापीअरसकोपंडितततजतप्रसंग ॥ १५ ॥ दोधवछंदा ॥ नीचकीप्री
तिकीरीतिइहीहैं ॥ तौलौंप्रयोजनतौलौंसहीहै ॥ कारजसिद्धिभयोंजवजानै ॥ रंचकहूंउर
प्रीतिनमानें ॥ १६ ॥ जौलगनीचकछुफलपावै ॥ तौलगनेहनयोंउपजावैं ॥ जादिनल
षकछूनहिआवै ॥ भाषिकुवातकलंकलगावै ॥ १७ ॥ सोईउपावहियेंअतिधारै ॥ जातेवु
रौकछुहोतनिहारैं ॥ रंचकरोषकहूंलषिपावै ॥ मेरुसमानमहीमैंगिरावै ॥ १८ ॥ सोरठा
चैंचलचित्तनिहारिअैसेचंचलनीचकौं ॥ बुद्धिविलोकिविचारिपंडितदूरिहितैतजत
१९ ॥ हरिपदछंद ॥ जेनरकरतजातिकोसंगहम्यातुरदीनदरिद्रीजानि ॥ तिनकेपुत्रक
लित्रपसुसंपतिहोतिअधिकसुषहानि ॥ जेकल्यानआपुचितचाहैंकरैंजोतिजन ।
कोमताकार ॥ निरगुनहूंजोहोइजातिजनताकोंराषैंभलीप्रकार ॥ २० ॥ कवकुनवारे

जातिमैंविग्रहजोशुभचाहैअपनोंई॥भोजनकैरोजातिमैंमिलिकैंअतिकप्रीतिबाढ
तिअवनीस॥भलीवातपूछैंअतभावैजातिमिलैआनंदउदोत॥तारतिजातिजानि
हिवारतिकैरेजातिमिलिसोईहोति॥२१॥सपतिपाइनवैजातियसोंजोइघहोतजा
तिकौजानि॥घोजलेतजैसोमृगहअहेरीताहिपापफलभगतयोआनि॥वूडतसोसजा
तिप्रतिकूलैंतरैसुहोइजातिअनकूल॥तातेसरलजातिसौंरहियेजाघविरोधनास
कौमूल॥२२॥तद्यपहोइअसंतरक्षाकीजैजातिकी॥वैइघअगनवंतनितचितचा
हततनुवक्रपा॥२३॥दोहा॥कैअसन्ननिरवाहकौंतिनैंग्रामकछुदेहु॥कुसलहोइकु
हवंसमैंलोकलोकजसुलेहु॥२४॥सोरठा॥आपबुदापोजानिरक्षाकीजैसुतनकी॥
विनतीलीजेमानिमोहिहितूगिनआपनो॥२५॥अबहूजियेआपमहाराजपंडव
नप्रति॥वाढेअवबलप्रतापसत्रुनकौंअनचितकरहु॥२६॥दोहा॥गामकछुनिर
वाहकौंजोकछुदैहौनाहि॥जबछिनिहौंविडरैमरैपछितैहोमनमांहि॥२७॥सोर
ठा॥लहैहियेसंतापघाटपत्योजेकरमकौ॥करमकरैनहिअपजीवनचेचल

जानियें ॥२८॥ जियजानतसवलोगअसुभकरमकोअसुभफल ॥ ताहिनिवारनजोगा
औरनकोउसु ज्ञानविना ॥२९॥ तुवकुलमेंअभपापदूरेयोधनतेयोंकियो ॥ वृद्धभएअव
अपनाकोफललहियेद्दगन ॥३०॥ दीजेतिनकौंराजहोइविगतपातकलगत ॥ अविनपतिसिरताजविज्ञानमेंपूजालहो ॥३१॥ भलीवातजेपंडितन आगेकहीविचारि ॥ तिन्हेंसफलजाकोसदाभजसलहेअवधारि ॥३२॥ सन्योज्ञानआंतमेंमनडरकियोनाहडरआनि ॥ ताकोफलकैहैकष्टउदेपापकौमानि ॥३३॥ पहलेकीनोंपापक्रियापेवारनविचारि ॥ दीजेंगोदुखवृद्धिइहविषमनरकमेंडारि ॥३४॥ चौपई ॥ निजवितवृत्तिलषेवोतात ॥ ज्योंहैंत्योंजानिवोवात ॥३५॥ सचिवकोजियविश्वास ॥ मूरखहूतराखिवोपास ॥३५॥ तिनिंदासूरमदसंचार ॥ एछहभेदमंत्रकेद्वार
मंत्रभेदकेद्वारनिहारि ॥ मंत्रहरागूढविचारि ॥३६॥ लहेधरमधमकामहभूपर ॥
गाजेनपनउनकेऊपर ॥ दोहा ॥ सुनेंनकछुजानेंननरवृद्धनसेयोकोइ ॥ धर्मअ
र्थरीतिहिलेहैंसुरगुरहूनरहोइ ॥ पवंगछंद ॥ परैसमदमेंजावनखवहजानियें

भा॰वि॰ कियौ अगिनि विनहैं मन नष्ट डर आनियै ॥ इंद्रन के वस होइ न षट सो मानियै ॥ तैं न हित
४२ कीवात न षत अव मानियैं ॥३९॥ दोहा ॥ नव वन देषै हग नौ कि बोड काज निहारि ॥ अपने लो
मन कौं परषत व भाषै मन विचार ॥४०॥ चौपई ॥ हैं अवल दाण को आचार ॥ छमा हैं
क्रोध हनिर धार ॥ विजय अकीरति हैं प्रकास ॥ कौरपरक्रम अनरथ नास ॥४१॥ दो
धरम चाल सामास दन हृति विलोकि विचारि ॥ पर विलत पंडित कुल हु भोजन वस
ने निहारि ॥४२॥ सोरठा ॥ पंडित सेवी प्रज्ञा प्रिय दरसन ॥ ज्वन कहे ॥ मित्र वंधु धर
मग पइन सौं अति हित पालियै ॥४३॥ मृदु धरम गप्रवीन जो न तजै मरजाद कौं ॥ सो कु
लीन अप्र कुलीन सो कुलीन तें है अधिक ॥४४॥ पदाछंद ॥ मनसौं मन बुधि सौं बुधि
मिलियै षान पान वरतें इह रीति ॥ असैं मीत मिले भागिन सौं छूटै कवहु न जाकी प्री
ति ॥ ऊपर हित कपट उर अंतर जे सेवन को वाको रूप ॥ जो उर वु छीयौ न हि मानैं ताकी
प्रीति विनास सरूप ॥४५॥ दोहा ॥ मूरष क्रोधी साहसी अरु अभिमानी होइ ॥ धरम र
हत सो मित्रता पंडित करै न कोइ ॥४६॥ गात वास संचौं भक्ति द्रव जित इंद्री धरमज्ञ ॥ ऐसौ ४२

मीतनत्यागियैमौनकहोमूतत ॥४७॥ इंद्रिनकौजचलाइवौअधिकमित्रतेंजानि॥अ
तिचलाइवौहोतपुनिअमरनकौंदुषदानि॥४८॥अनरूपाधीरजछमामृदुतासरलसु
भाव॥मित्रनसौंमनमांनकरिगनतेबाढतआव॥४९॥ पादाकुलकछंद भलीवातसौं
धनउपजावैं॥ सूरनकौसहसहजसुभावैं॥६०॥भएकाजकौसेषनिहारैं॥होंनहारलखन
चितधारैं॥तिहअौसरकरिवैसोकरैं॥ताकौअुरथकहोकोहरैं॥६१॥उद्यमसुमवलना
कौपरातन॥मृदुताअरुसंतनकौदरसन॥सोविश्रवनकारजकौजेग॥यहतेलहतम
पतिहिलोग॥६२॥मनवचकरमनिरंतरजाहि॥इहप्रानीसेवतचितचाहि॥नहचैं
सोईजाकोपरै॥यातेभलौकरमनतरकरै॥६४॥ दोहा ॥सुषकौदुषकौभूलहैअौजा
मैंमहाराज॥वाविनहोतनकाजकछुयातेहोतअकाज॥६५॥ यातेअौरनलछमी
पथ्यनयातेअौर॥सोप्रभुलछिसमथैहैंछिमाकरैसवठौर॥६६॥छिमासहजहीक
रतहींजेनहिसकतिसमेत॥सकतिसमेतछिमाकरतपरमधरमकेहेत॥६७॥जा
सुषकरिसेवतरहेअुरथधरमहितमाडि॥सोसुषकवहूनछाडियेमूढनकौहितछा

भलौवरयवकरितादिउरावै॥ विशमनकैमनस
सैमनसनावै॥८०॥

भा॰वि॰ डि॥ ५८॥ सोरठा॥ दुष आरत अत दीनन नात्तक डन्म दरआलसी॥ इंद्रिन के आधीन।
४३ तिष्टि रहे न लछिमी॥ ५९॥ दोहा॥ दयावंत लज्जा सहत मदु अरु सरल सुभाय॥ ता नर कौ
असमर्थ गनि लेत का वुद्धि इराय॥ ६०॥ अति निरगुन अ अति अतिगुनी अतिदाता अति सूर
अति पंडित अति चतुर सौं रहत ति लछिमी दूरि॥ ६१॥ गन सौं गन चाहे न श्री जित भावे तित
जाय॥ डोलति अंधा गार लौं रहत तिनक कुठहराय॥ ६२॥ शास्त्र श्रवन फल सील हत ति
य फल सुत रति जोग॥ अगिनिहोत्र फल वेद कौ धन फल दत्त व भोग॥ ६३॥ वन मैं रन मैं दु
रग मैं विषम आपदा माहि॥ जाकौं धीरज जस व्है ताकौं डर कछु नाहि॥ ६४॥ करम करत
परलोक हित जो रिपा पकेदांम॥ फल अधर्म को भोगवत अंत न आवत कांम॥ ६५॥ उ
द्यम सत जम चतुराई कौ रस मैं लखि काज॥ अउमाद धीरज सुमति विभव मूल महारा।
ज॥ ६६॥ ब्राह्मन ज्ञान कौं बल बल नृपत पसी बल ताल॥ गुनवंतन कौं बल छिमैं दुष्टन कौं ब कौ
ल घात॥ ६७॥ इहदि विश्रा धि गुन वचन जल थल मूल बषानि॥ छिन इच्छा पूरन कि
पैन हि रतन ते हत हानि॥ ६८॥ चौपई॥ जो प्रविकूल आपतें होइ॥ और रहेत काजैं न हि। ४३

सोइ॥ यह संछेप धरम उर आनि॥ अरु छत्र हति ताकों मति ठांनि॥ क्रोध जीति यैहै अक्रो
ध॥ जीति असाध साध पर बोध॥ जीति कदर्ज हिदै कछु दान॥ झूंठ जीति यै सांच प्रधान
७०॥ मूरिष धूत अलसी चोर॥ नास्तिक भीरु कृतघ्नी घोर॥ कूर पुरष प्रकास॥ २ न मानी९
कौं रंच न करि विस्वास॥ दोहा॥ वृद्धन की सेवा करत सब सौं प्रणत सुभाव॥ तेया चन अ
गचारि फल जस बल कीरति आप॥ ७२॥ पासैं अरि के चरण अरु अति कलेस ते जा
नि॥ अप्राप्य हतें छोडे धरम तिनैं न मन हूं आन॥ ७३॥ सोच परिष कों कीजिये होइ जु
विद्याहीन॥ पति पतिनी संचित विनां सोचत निरधि प्रवीन॥ ७४॥ प्रजा रहै आहा
रविन ताकों करियै सोच॥ ताकौं सोच विसेष बेरल भूप विन पोच॥ ७५॥ छंद भुजंगी॥ हे
जरा देहधारीन सो पथ्य जानैं॥ जरा सैल कौं नीर धारा वषानैं॥ अभोगे जरा कामिनी
कौं वषानी॥ जरा दुष्ट सौं चित्त है घोर खानी॥ दोहा॥ अजजन हैं मल भोग कौं दुज मल
अव्रत वषानि॥ असुचि देस मल भूप कौं झूंठ पुरिष मल जानि॥ ७७॥ सो वन तेक
हूं नींदन हारैं॥ पानकै वारुणी कौ न निहारैं॥ कामिनि काम ते हो विनमानैं॥ ईंधन

भा॰वि॰ तेकडुग्राग निग्रघानैं ॥१८॥ देधन मित्र कियेवसजानैं ॥ दुर्जनग्राद्युधसौंवसग्रानैं
४४ भोजनसौं तियजोवसहोइ ॥ जीवनधनल्यलेहै नरसोइ ॥७९॥ दोहा ॥ जीवतजिन
सिगहैसहस्त जीवतसतजिनिसाथ ॥ जीवैगेकहभांतिइहचिंतातजो ग्रकाथ ॥८०
पश्रुवस्नुग्रन्नपुवर्णीतिय ग्रौरजितसुषमानि ॥ होतनएसवएकके मोहनजोइह
जोनि ॥८१॥ ग्रववकह्यौंविनतीकरैं जौसमताजियग्राहि ॥ तौनिजसुतग्ररुपंडु
सुतसमदेषोहितचाहि ॥८२॥ इतिश्रीमहाभारथेउद्योगपर्वणिधृतराष्ट्रविदुरसं
वादेविदुरप्रजागरेनामग्रष्टमोऽध्याय ॥८॥ विदुरवाच ॥ दोहा ॥ ग्रनासक्तिउ
त्तिमकरमकरतजुसक्तिसमान ॥ तेजगमैंसववरलहतजसमंतम परमान ॥१॥
ग्रौरनपासंसारमेंहूजोगतिसरसंत ॥ सरणागतकौंदेतहैंज्योंदुषदायकसं
त ॥२॥ सोरठा ॥ तजतवडेकरूग्रर्थ निरषिग्रनीतिरुधर्मग्रत ॥ दुषहीदुषहस
मर्थछोडतज्यौंग्रहिकांचुरी ॥३॥ दोहा ॥ हूठवोलिज्योंप्रभुतालेहैं ॥ भूपन ४४
ग्रागैंचुगलीकहैं ॥ गरगनसौंझूठोहठठानैं ॥ एवहूसघ्रूमानिवषानैं ॥४॥

॥दोहा॥ मूल अनूप अमृत्य कौं लदत बुद्धि अपवाद ॥ नास करत सब रूप कौं मन
कौ हृद्यां विषाद ॥ दोहा ॥ अति उतताय लो होइ गुन से वाक बकुन करैं ॥ चहैं वडाई सोइ
ए विद्या कितीन आरि ॥ ६ ॥ छप्पै ॥ ताकौं विद्या कहा चाह रूप की जो रापै ॥ ताकौं रू
प पुनि कहा हियैं विद्या अविलाषै ॥ शुभ च हि विद्यानजें तजें विद्या रूप चाहै ॥ रूप ब
गुन विघहि चोप परस्पर निकारन आवै ॥ मइ ख्याल समोह कठोरता गर्व चपल
ता वात मनि ॥ नर विद्या अभिलाषन कहैं प्रगट दोष एसात भनि ॥ ७ ॥ चौपई ॥ आगि
अघा पन काठ ह पायें ॥ धापे न सिंधु नदी सब आयें ॥ भूत हनैं जब हारन मांनैं ॥ भोग
ते कामिनि तिप्ति न मांनै ॥ ८ ॥ कवित्त ॥ आसा हनैं धीरज कलंक बढ वारि हनैं कृपनता
नास करै रूज सरूप वेस कौं ॥ क्रोध हनैं लछिमी सचाई कौं झुठाई हनैं नास करै पल मैं
गुमान गुन वेस कौं ॥ लोभ ते विनास होत धरम कौ नीकि भांति कियें विन न्याय नास हो
त है नरेस कौं ॥ पसु कौं विनास होत पालि पैन आछी भाति एक द्विज कोपना सकरै सब
देस कौं ॥ ९ ॥ हट कुजा निजरू दीन कुलीन ॥ सपा आपनौं होइ जु दीन ॥ तौ वो रूपे ॥

कांसौचीन ॥ चंदन छेरी वैलन छीन ॥ घृतजल तेल ग्रारसी ग्रन्न ॥ ग्रंबर सार्थ लंब छ
वाणि ॥ रोचन कस्तूरी चित लस्थ ॥ इनकौ संग्रह करे गृहस्त ॥ इनते सिद्ध होत बहु काज ॥
मनु इह बचन कही महाराज ॥ १२ ॥ छप्पै ॥ मध्य एक त्रिभुवन कहौं तोसौं उत्तम ग्रब ॥ शा
स्त्रनीति इतिहास सोधि देषहु भूपति सब ॥ काम लोभ भय हेतु हियै कबहू नहि सजियै
जीवन हू के हेत धरम कौं सार न तजियै ॥ सुष दुष ग्रन्य त्यसंसार मैं धरम नित्य उर ग्रा
न नियै ॥ यह जानि जीव जीवन मरन प्रत्र नित्य जिय जानियै ॥ १३ ॥ दोहा ॥ तजि ग्रनित्य नित्य
गहि नित्य प्रभु धरौ हियै संतोष ॥ परम लाभ संतोष तातें लहियै मोष ॥ १४ ॥ ग्ररिल्ल ॥ है
भूप किते बलवंड महीतल मैं भए ॥ विक्रम तेज प्रताप बली वल सौं ठए ॥ छाडि धे
रा धन पूरन भोगन ए न ए ॥ देषहु ते सब ग्रंत कके सम ह्वै गए ॥ १५ ॥ चौपई ॥ पुत्र ग्र
हो इह बहु दुष्षन पायौ ॥ देषि मरयौ घर मैं तें निकायौ ॥ रोइ बिलाप घरी कलौं कीनौ ॥ का
ठ जैयौ डारि चिता मह दीनौं ॥ १६ ॥ जाकै इतौ मन मोह सौं लागत ॥ प्रेत भयै कोउ संग
न लागत ॥ पाचस मातए पंच हू गेरैं ॥ भोग करै धन कौं कोउ ग्रौरैं ॥ १७ ॥ पावक देह द

हे सव भछी ॥ कै को ऊभ सतौं हं पसु पछी ॥ जेहुत वंध व जाति कहावत ॥ छाडि मसां नतिहीं छिन आवत ॥ जा तन के फल फूल न लागत ॥ ताकहु छाडि विहंग ज्यौं भागत ॥ जीव हि जात परंतु अकेलौं ॥ हैत हां पुण्य रु पाप कौ भेलो ॥ १९ ॥ दोहा ॥ पावक में जव डारियत जानत सुष दुष कर्म ॥ जाते नर कौ जतन सौं संचित करियै धर्म ॥ २० ॥ महा तिमर या लोक तै ऊपर करियत जोर ॥ नीचें हूं या लोक में अंधकार अति घोर ॥ २१ ॥ इन्द्रिन कौ मोहन महा जाते जगत डराहि ॥ ज्ञान तत्व विचारि उ भु तुम जिनि पावहु ताहि ॥ २२ ॥ ए मेरी सव वात सुनि कारि हो एई साज ॥ निरभय है हु हु लोक में जस पै हो म हाराज ॥ २३ ॥ सवैया ॥ आत मा पुण्य न दी व डो वीर थ्य सुद्ध्र सदा कहियै जु अषंडित ॥ स त्य है नीर तहां तट सील अहो हद या के तरंग न मंडित ॥ ता महि न्हाइकैं होइ पुनीत न वा हे जिनको मन लोभ हि षंडित ॥ केकै पुनीत करै वहु पुण्य विचारत जै पर मारथ पंडित ॥ २४ ॥ दोहा ॥ महाराज हू जीन दी सुनियै ताकी वात ॥ पांचौ इंद्री जल जहां लहरि लोत ॥ २४ ॥ काम क्रोध हे ग्राह अरु लतस्मो प्रवल प्रवाह ॥ तामें धीम रना व गाहि भकीलात ॥ २५ ॥

भा॰वि॰ जनमद्दुरगतरिजाय ॥२५॥ चौ॰ ॥ बुद्धिवद्धि विप्र द्विज होइ ॥ विद्यावद्ध वंधु निज को
४६ इ ॥ धरमवद्ध कुलवृद्ध सुभाय ॥ इनकी पूजा करिय कुभाय ॥२६॥ इनकौं पूछि करै कछु का
ज ॥ कवहुन मोह लहै महराज ॥२७॥ अरिल्ल ॥ सिस्नउदर धीरज सौं राषि सु लीजियै
पानि वाणि कीनैंननरक्षा कीजियै ॥ नैन श्रवन की मन सौं रक्षा ठानियै ॥ मनकी र
क्षा वचन सत्य करि मानियै ॥२८॥ छपै ॥ संध्यातर्पन करै नित्य तर्पन विधि मंडै सष
धरै उपवीत नित्य अध्ययन हि छंडै ॥ पतित अन्न नहि षाय द्रव्य मग षतन हि भावै ॥ गु
रु की आज्ञा मांगि करम करिवौं अविलाषै ॥ कवि वृक्ष कहै मनवच करम धर्म हेत रा
षै जतन ॥ कवहूं न होत वा विप्र कौं त्रलोक तैं आपतन ॥२९॥ दोहा ॥ वेद पढै वहु जग्य
करि करै जथाविधि दान ॥ भली भांति पालै प्रजा तजै जुद्ध मैं प्राण ॥ गाय विप्र के हेत
जो लहै सत्रु को घात ॥ ता क्षत्री कौ स्वर्ग ते होत न कवहूं पात ॥३२॥ वैस्य व दर्पठि दान
करि तपु करि कलिमल षोइ ॥ काल विनै निज वृत्ति सौं गुरपुरवासी होइ ॥३३॥ सेवा ती
न्यो वर्णकी सु करै मन लाइ ॥ इन्है होत संतुष्ट वह लहै स्वर्ग मैं जाइ ॥३४॥ ध मि

47 folio

वांच्योवणिकैमैंवत्तोअनरूप ॥ इनकैहेतुविचारियैंअपनेउरमैंभूप ॥ ३५ ॥ पंडुपुत्रनको
हिपाइहैंजोअवअपनोंराज ॥ छुटिहैंछत्रीधर्मतेकोहैवडोअकाज ॥ ३६ ॥ विनतीवारं
वारअभुइहैकहतुहोंभाषि ॥ लीजेअपनेधरममेंभ्रातसुतनकोराषि ॥ ३७ ॥ धृतराष्ट्रवा
चा ॥ छप्पै ॥ भाषतहौतुमविदुरवातनिसवासरयौंहीं ॥ मेरीयौमतिहोतिकियौचाहतहों
त्योंही ॥ पंडुसुतनकोहितविचारिचाहतउरमैंअति ॥ दुरयोधनहितताकिहोतिविपरी
तिवहुरिमति ॥ अवहोंनहारतेजगतमैंतोंहिवियोकोउप्रवल ॥ सोचोअदिष्टकाविहि
सकहिहैनरकोपोरिषविफल ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ विदुरप्रजागरमैंकह्योइहभांतिमनलाइ
पढसुनैंसमझैकहैताकोपापविलाय ॥ ३९ ॥ सकलकथाइतिहासकोभारथकहियतसार
तामैंउद्योगसुपरवतामैविदुरप्रचार ॥ ४० ॥ राजाआपापामलखुकीआसासवविहितजानि ॥
विदुरप्रजागरकहसकविभाषाकरीवषान ॥ ४१ ॥ [illegible] हेहिंकौंकरीकविकुलसरलसु
भाव ॥ भूलचूकेकछुहोइसौलीजोंसमझि [illegible] सज्जनहैंसेअरुवानवैंसमतका ॥
तिकमास ॥ शुक्लपक्षपांचैंगुरौंकीनोंग्र [illegible] ४३ ॥ इतिश्रीमहाभारथेउद्यो

भा॰वि॰
६१

विमपर्वणि विदुरप्रजागरे विदुरधृतराष्ट्रसं ... मोऽध्यायसमाप्तः ॥ ९ ॥ संम

इति श्री विदुरप्रजागर संपूर्णम् ॥ संमत ॥ १८ ... जेठवदी ५ चन्द्रवासरे लिषी

गुपालराय श्रीवृंदावनमध्ये ॥

१८६८
११२५

250